

# अमृतवाणी

द्वितीय अंक



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA  
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा  
Dedicated to Truth in Public Interest

**भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग**

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय,  
केरल, तिरुवनंतपुरम व शाखा कार्यालय, तृशूर

# अमृतवाणी

अर्धवार्षिक पत्रिका

अप्रैल- सितंबर 2024 - द्वितीय अंक

**भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग**  
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय,  
केरल, तिरुवनंतपुरम व शाखा तृशूर

प्रकाशन:

अमृतवाणी- हिंदी ई- गृह पत्रिका

प्रकाशक: प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,  
केरल, तिरुवनंतपुरम एवं शाखा कार्यालय, तृशूर

अंक:

द्वितीय अंक

मूल्य:

राजभाषा के प्रति निष्ठा

## संरक्षक

श्रीमती अतूर्वा सिन्हा

महालेखाकार

## मुख्य संपादक

डॉ अनीष डी

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं एएमजी I)

## संपादक मण्डल

### संपादक

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका, हिंदी अधिकारी

### सदस्य

श्री मनोज के के  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री कण्णन एस एस  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री योगेन्द्र सिंह  
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती नीनू एम डी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्रीमती राधिका टी.वी  
वरिष्ठ अनुवादक

अतूर्वा सिन्हा, भा लेप और ले से  
महालेखाकार



हमारे कार्यालय की गृह-पत्रिका “अमृतवाणी” के नवीनतम अंक का प्रकाशन हमारे लिए अत्यंत खुशी का अवसर है। वर्ष 2004 इस दृष्टि से विशेष है कि हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हुए पचहत्तर वर्ष पूरे हो चुके हैं। ‘राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती पर हार्दिक अभिनंदन।’

केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में राजभाषा पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह पत्रिका न केवल ज्ञान और अनुभव का आदान-प्रदान करती है, बल्कि कर्मचारियों को हिंदी में अपनी सृजनात्मक और साहित्यिक प्रतिभा को प्रकट करने का भी सुअवसर प्रदान करती है। किसी भी कार्यालय की पत्रिका उसके कार्मिकों के भावनाओं और विचारों का दर्पण होती है। “अमृतवाणी” का प्रकाशन राजभाषा के प्रगतिशील प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ कार्यालयीन जीवन में हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। मैं आशा करती हूँ कि यह पत्रिका विविधता में एकता का प्रतीक बनी रहेगी और अपने बहुआयामी दायित्व को पूरी तरह से निभाने में सफल होगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन और उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित.....

संरक्षक  
'अमृतवाणी'

**डॉ अनीष डी, भा लेप और ले से  
वरि.उप महालेखाकार / प्रशासन एवं एएमजी I**



हमारे कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका 'अमृतवाणि' का द्वितीय अंक लेकर हम पाठकगण के समक्ष उपस्थित हैं। 'अमृतवाणि' के प्रथम अंक के लिए जो प्यार और प्रोत्साहन आपसे प्राप्त हुआ है उसके लिए अपना आभार व्यक्त करता हूं। आज से पचहत्तर वर्ष पहले 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी के परिनिष्ठित रूप को राजभाषा के तौर पर स्वीकार किया गया था। इस साल, 14 सितंबर 2024 को हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार करने के 75 वर्ष पूरे हो गए हैं अर्थात् यह राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती वर्ष है। हीरक शब्द हीरे का द्योतक है। सभी देश प्रेमियों की यही इच्छा है कि हीरे की तरह उज्ज्वल प्रभा बिखराती हुई हिंदी अपनी प्रगति पथ पर अग्रसर होती रहे और भारत के स्वाभिमान का शश्वत प्रतीक बनी रहे।

**‘राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती पर हार्दिक बधाई।’**

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उत्तम तरीकों में से एक है विभागीय पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालयीन स्तर पर हिंदी लेखन को प्रोत्साहित करना। हमारे कार्यालय के प्रतिभावान रचनाकारों के साहित्यिक सौगातों के साथ-साथ लेखापरीक्षा रिपोर्ट का सार-संग्रह, विभिन्न कार्यालयीन कार्यकलापों जैसे पर्यावरण दिवस, स्वतंत्रता दिवस समारोह आदि की रंगारंग झलकियों आदि को भी सम्मिलित करते हुए इस बार भी 'अमृतवाणि' को जानकारीपूर्ण एवं आकर्षक बनाने का हर संभव प्रयास किया है। उम्मीद है कि पहले अंक की तरह यह अंक भी आपको पसंद आएगा और उतना ही सराहा जाएगा। आपके विचारों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

**मुख्य संपादक 'अमृतवाणी'**

# इस अंक में

## साहित्यिक

|                                                       |                 |
|-------------------------------------------------------|-----------------|
| <b>एक पैगाम पेड़ों के नाम</b>                         | <b>पृ.सं.08</b> |
| सुश्री पेबा पी एच, उप महालेखाकार                      |                 |
| <b>पतंग की आशा</b>                                    | <b>पृ.सं.10</b> |
| श्रीमती उषा बर्टी, वरि.लेप.अधिकारी                    |                 |
| <b>जीवन की सुरमयी राहें</b>                           | <b>पृ.सं.11</b> |
| श्री गोपेश कुमार, सहा.लेप.अधिकारी                     |                 |
| <b>भारत की स्वतंत्रता हमारी शान</b>                   | <b>पृ.सं.12</b> |
| श्री निपिन प्रकाश, लेखापरीक्षक                        |                 |
| <b>जिंदगी मेरी है</b>                                 | <b>पृ.सं.13</b> |
| सुश्री देविका ए एन                                    |                 |
| <hr/>                                                 |                 |
| <b>सही – गलत</b>                                      | <b>पृ.सं.14</b> |
| श्री अनुराग शुक्ला, सहा.लेप.अधिकारी                   |                 |
| <b>जीवन दर्शन और सशक्तिकरण पर एपिकेवट्स के उद्धरण</b> | <b>पृ.सं.16</b> |
| श्री बिजू श्रीधर, सहा.लेप.अधिकारी                     |                 |
| <b>मैनिफेस्टेशन की शक्त: अवचेतन मन को अनलॉक करना</b>  | <b>पृ.सं.19</b> |
| सुश्री मालविका जे आर                                  |                 |
| <b>जीवन के चरण दो शताब्दियों में</b>                  | <b>पृ.सं.21</b> |
| श्रीमती सुशीला पी वी, वरि.लेप.अधिकारी                 |                 |
| <b>मेरे प्यारे पगु</b>                                | <b>पृ.सं.23</b> |
| श्री विनय विनोद                                       |                 |
| <hr/>                                                 |                 |
| <b>अमावास में पूर्णिमा</b>                            | <b>पृ.सं.25</b> |
| सुश्री बिंदू के एन, पर्यवेक्षक                        |                 |
| <b>मैं भारत हूँ</b>                                   | <b>पृ.सं.29</b> |
| श्री गोपेश कुमार, सहा.लेप.अधिकारी                     |                 |
| <b>सकारात्मक पालन-पोषण</b>                            | <b>पृ.सं.31</b> |
| सुश्री म सुश्री मैथिली जे आर                          |                 |

|                                              |          |
|----------------------------------------------|----------|
| स्त्रियों की सुरक्षा                         | पृ.सं.34 |
| सुश्री भद्रा आर                              |          |
| वयनाड में भूस्खलन आपदा                       | पृ.सं.35 |
| सुश्री नीनु एम डी, वरि.लेखापरीक्षक           |          |
| कन्याकुमारी यात्रा: एक अद्वितीय अनुभव        | पृ.सं.38 |
| सुश्री रेया बी जोसफ                          |          |
| <hr/>                                        |          |
| विश्व पर्यावरण दिवस 2024                     | पृ.सं.41 |
| स्वतंत्रता दिवस समारोह 2024                  | पृ.सं.43 |
| ओणम                                          | पृ.सं.45 |
| लेखापरीक्षा रिपोर्ट                          | पृ.सं.49 |
| ई-ओफिस                                       | पृ.सं.52 |
| फोटो गैलरी-पत्रिका प्रकाशन व नशाकास पुरस्कार | पृ.सं.56 |
| आपके पत्र                                    | पृ.सं-61 |

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं।



## एक पैगाम पेड़ों के नाम



सुश्री पी एच षेबा  
उप महालेखाकार

आप कैसे हजारों वर्ष जीवित रहते हैं  
बार-बार ये सवाल मन में उभर आते हैं  
कि क्यों नहीं जिन्दा रह सकता मानव भी  
इतने अधिक वर्षों तक  
जब भी कोई जनाजा सामने से गुजरता है  
मेरा मन कुंठित हो जाता है  
क्यों मानव नहीं जी पाते आप ही की तरह हजारों साल  
ना कोई तनाव ना ही कोई बंदिश  
एक ही जगह खड़े अपनी शाखाओं को चारों ओर  
फैलाते हैं हरे-भरे, मस्त और बिंदास  
हवाओं में झूमकर खुशियां बांटकर....  
लेकिन हम मानव ठहरे अधम  
तुच्छ वस्तुओं पर करते हैं जीवन न्योछावर  
काम की हो या बेकार की  
जल उठता है हमारा कलेजा  
दूसरों की तरक्की पर  
आधी जिन्दगी नष्ट करते हैं बेतुकी बातों पर  
ईर्ष्या की धुंआओं से पडे काले मन  
सोचता है हजारों बार थामना किसी का हाथ  
दुनिया के ऐशो आरामों की है सिर्फ फिक्र

अशांत समंदर की तरह खलबली मचा रहा  
 हे पेड आप तो है महान, उदार, दानशील  
 है बडा दिलवाला, जो करने को तैयार हैं कुरबान सबकुछ  
 पत्तों से लेकर जड़ों तक टहनियों से लेकर तनों तक  
 पथिकों के लिए छांव, भूखों के लिए फल  
 अपनी बांहें पसारकर करते हैं सबको स्वीकार  
 निश्चिंत शांत मन कर देता है निर्विघ्न जीवन  
 प्राणवायु जो आपकी शक्ति और निधि है  
 आपसे सिमटकर हम भी जिंदगी को गले लगाएंगे  
 फिर भी एक सवाल मन को सताता है  
 आप कैसे हजारों वर्ष जीवित रहते हैं ।  
 आपके तौर-तरीके अपनाने के,  
 आपके नकशे कदम पर चलने के लिए  
 है ठान के बैठी मैं अपनी आयु बढ़ाने के लिए  
 बस आपके जीवन का जादुई मंत्र  
 लगे अपने हाथ में तो हो मेरा जीवन सफल  
 बांटलूं मैं यह जीवन मंत्र सभी में  
 कि मेरे प्रिय जन सालों साल जीते रहे ।



## पतंग की आशा

विस्तृत नील गगन को देखकर  
आह भरी पतंग आँखों में आँसू लेकर  
छूना है आस्मान की बुलंदियों को  
सारी दुनिया को दिखाना है मेरा कमाल  
बादलों के साथ खेलना है  
पंछियों से आगे निकलना है  
पहाड़ों से भी ऊपर उड़ना है  
ऐसे मेरे हजार सपने हैं।

लेकिन उड़ने की जब भी मैं  
करती हूँ कोशिश  
मुझे रोक देती है  
मुझसे बंधी हुई ये बेरहम डोर  
अगर ये बंदिश न होती  
मनमानी करने की इजाजत मुझे होती  
अपने सपनों को करती मैं साकार  
उड़-उड़कर स्वर्ग के द्वार तक जाती।

मन ही मन मैंने निर्णय ये लिया  
तोड़ डालना है मुझे यह बंधन  
खुद को सीमित नहीं रखना है  
सारी पाबंदियों से छुटकारा पाना है  
इसी सोच में ज़ोर से खींचा  
लगातार खींचकर तोड़ डाला डोर को  
आखिर हो गयी मैं आज़ाद  
हो जाएंगे मेरे सपने पूरे  
यही सोच में तैरती रही हवा में  
लेकिन जब मैंने उड़ने की कोशिश की  
मुझे थकान-सी महसूस हुई  
पायी मैं खुद को बिलकुल शक्तिहीन



**श्रीमती उषा बेर्ती**  
**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**

मुश्किल था तेज़ हवा से लड़ना  
मैं गिरती चली जा रही थी  
उड़ने की मेरी कोशिश हुई नहीं सफल  
जा गिरी धीरे-धीरे मैं कीचड़ में  
कटी पतंग को देखकर लोग हँसने लगे  
कुछ लोग घूर-घूरकर देखने लगे  
सबक मैं ये सीख गयी कि  
जीवन में घमंड अच्छा नहीं है  
चुनौतियों से दूर भागना नहीं  
मुसीबतों से लड़कर ही जीत जाना है

घमंड से दूर रहना है  
कोशिशें करते रहना है  
भारी मन से पछताती रही  
तब प्यार से मुझे किसी ने उठाया  
मुझे साफ करके वापस डोरी से बाँधा  
फिर मुझे धीरे-धीरे उठाया  
हवा के लहरों के साथ खेलकर  
मन खुशी से उछल पड़ा  
दुबारा मिली ये जो ज़िंदगी  
जियूँगी मैं खुशी से हर पल।

## \*\*\*"जीवन की सुरमयी राहें"\*\*\*



श्री गोपेश कुमार  
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जिंदगी की राहों में, हर कदम इक इम्तिहान है,  
कभी हंसी, कभी आँसू, ये उसका अंजाम है।

ख्वाबों की चादर में, लिपटी हुई सी है,  
हर सुबह नई उम्मीद, हर रात एक अरमान है।

राह में कांटे मिलें, या फिर गुलाब खिलें,  
जीने का मज़ा तभी है, जब मन में ईमान है।

हर मोड़ पर एक सीख, हर दर्द में एक सबक,  
जो समझे इस सफर को, वही तो महान है।

कभी धूप, कभी छांव, ये जीवन का खेल है,  
सुख-दुख के हर पल में, बसा हुआ भगवान है।

मंजिल की जुस्तजू में, राही चलता जाए,  
रुकने का नाम नहीं, यही जीवन का ज्ञान है।

पलकों की झिलमिल में, सजे ख्वाब अनमोल,  
हर सुबह नई कहानी, हर शाम एक गुमान है।

दिल की धड़कनों में, बसी हुई है जिंदगी,  
हर धड़कन में बसी, एक नई पहचान है।

अपनी राह खुद बनाएं, अपने कदम खुद संभालें,  
जो खुद पे यकीन रखे, वही सच्चा इंसान है।

जिंदगी का ये सफर, खूबसूरत है बहुत,  
हर पल को जी भर जीना, यही उसका फरमान है।

## भारत की स्वतंत्रता हमारी शान



श्री निपिन प्रकाश  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

साल की गरमियों में, आई एक खास घड़ी,  
आज़ादी का सूरज, चमकाया दिलों को ।  
5 अगस्त का दिन, भारत की शान में,  
लहराता है तिरंगा, हर दिल में उल्लास का संजीवनी धागा ।

इतिहास की धुंध से, उभरी एक सुनहरी किरण,  
हमने पाया स्वातंत्र्य, खुली देश की भाग्य रेखा ।  
लक्ष्य की ऊँचाइयों तक, पहुँचाने वाला यह दिन,  
सपनों की असली उड़ान, बन गया हमारी जीत की शुरुआत ।

स्वाधीनता की गाथा, हमारे वीरों के बलिदान,  
महात्मा गांधी, नेहरू, भगत सिंह के आदर्श महान ।  
उनके संघर्ष और तपस्या ने हमें राह दिखाई,  
15 अगस्त को, हम उनके सपनों को  
साकार करने की कसम उठाने आए ।

हर साल इस दिन, गगन में गूँजते हैं स्वर,  
“जन गण मन” की धुन, दिल में भर देती है उमंग ।  
विविधता में एकता, भाईचारे का संदेश,  
हम सब मिलकर मनाएँ, स्वतंत्रता की इस खास पर्व साभिमान ।

चलो, इस दिन को माने, संकल्प लें नया,  
भारत को बनाएं और भी महान और सशक्त ।  
15 अगस्त का यह दिन, गर्व और उल्लास का प्रतीक,  
आज़ादी की इस खुशी में, सजे हर दिल में एक नई उम्मीद ।

## जिंदगी मेरी है



सुश्री ए एन देविका,  
सुपुत्री श्री जी सी नारायणन पोद्दी,  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कहीं खो गई थी, खुद से दूर हो गयी थी,  
आईने में भी अपनी सूरत अनजानी लग रही थी।  
सपने धुंधले थे, हौसले थके हुए,  
हर दिन जैसे बोझ से बंधे हुए।



पर अब बस! थमना मुझसे न होगा,  
जो टूटा था, वो फिर से जुड़ना होगा।  
गिरते-गिरते अब उड़ना सीखा है,  
दर्द के पार उम्मीदों का दीया रखा है।

न आँखें झुकेंगी, न आवाज़ दबेगी,  
मेरे दिल की राहें अब मुझसे चलेंगी।  
जिन तुफ़ानों ने रास्ता रोका था कभी,  
उन्हीं से मैं लहर बन निकली अभी।

मैं हूँ अपनी कहानी की नई शुरुआत,  
हर कदम पे अब है मेरा ही साथ।  
न कोई इजाज़त, न इंतज़ार और होगा,  
मैं ही हूँ रास्ता और मंज़िल भी मेरी होगी।

जिंदगी अब मेरी है, मैं जी रही हूँ,  
हर पल को गले से लगा रही हूँ।

## सही - गलत



श्री अनुराग शुक्ला

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकृति में घटित किसी भी घटना का मूल उद्देश्य संतुलन स्थापित करना है। आप सभी ने कभी न कभी फूड चैन, फूड वेब, नाईट्रोजन साईकिल, वाटर साईकिल इत्यादि के विषय में अवश्य पढ़ा होगा। कितनी अनोखी व अद्भुत संरचना है न ??? सब कुछ एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। अगर कुछ अधिक या कम है, तो उसके पीछे एक स्वभाविक तर्क है। हर एक क्रिया एक दूसरे को प्रभावित करती है और इन सभी के पीछे एकमात्र लक्ष्य है संतुलन कायम रखना, परिणाम स्वरूप सारे क्रिया-कलाप निर्बाधित रूप से चलते रहते हैं। प्रकृति की सबसे नायाब संरचना है; 'मानव' जिसको मस्तिष्क प्रदान करके एक अलग पद प्रदान किया गया है। मगर विडंबना देखिये !!! प्रकृति की इस नायाब कृति को संतुलन नाम से भी बुखार आ जाता है !!! अब यह संतुलन विचारों का हो, माया-मोह का हो, धन का हो, शक्ति का हो अथवा किसी भी प्रकार का, हमको वह तनिक भी नहीं भाता। हम प्रायः अपने दिमाग का जो सही मायने में किसी भी सुपर कम्प्यूटर से कम नहीं है, उसका विवेकपूर्ण इस्तेमाल या तो करते नहीं हैं या फिर करना नहीं चाहते। हमारे लिए सही-गलत, नीति - अनिति के अपने अपने हिसाब से अलग-अलग मापदण्ड हैं। इनका सच्चाई से वास्ता होना न होना मायने नहीं रखता। जो तथ्य या विचार हमें सही लगते हैं, हम उनके पीछे खड़े हो जाते हैं। अक्सर अपने सामाजिक परिवेश में आप ने ऐसी घटनाओं का सामना किया होगा जहाँ पर दो व्यक्ति किसी विषय पर वाद-विवाद करते हैं और एक दूसरे के विचार सुने बिना अपनी अपनी धुन में लगे रहते हैं। हमारे सोशल मीडिया

मंचों पर ऐसी घटनाएँ आम बात हैं और नतीजा शून्य ही निकलता है। संचार क्रांति के फलस्वरूप जहाँ एक तरफ हमारे जीवन को सुलभ व सुखद बनाया है, वहीं इसका एक दूसरा पहलू भी है। इसके माध्यम से उत्पन्न मंचों का उपयोग प्रोपोगेंडा, पी आर इत्यादि गतिविधियों के लिए बड़ी चतुराई से किया जाता है। आपको ज्ञात भी नहीं होगा कब आप इनके जाल में फँस चुके होंगे ???

निष्पक्षता का छलावा करते हुए न्यूज चैनल्स में एक तरफा सोच या विचार का प्रचार चरम पर है। इनके पास हमें अपने तर्क से प्रभावित करने की कला होती है। अगर हम अपने विवेक के तराजू में माप-तौल किए बिना इनका ग्रहण करने लगेंगे तब निश्चित ही हम उनकी चालाकी का शिकार बन जाएंगे।

आधुनिकीकरण, विज्ञान, तकनीकी का विकल्प आज के बदलते हुए परिवेश में अपरिहार्य है। हम स्वयं को इनके प्रभाव से अछूत नहीं रख सकते। डार्विन का 'योग्यतम ही उत्तरजीविता' सिद्धांत भी कुछ यही वकालत करता है। कुछ समय पूर्व मैंने भी निर्णय लिया कि सोशल मीडिया मंचों से दूरी बनाके रखूँगा और परिणामस्वरूप मैंने अपने फोन से इनको छुमन्तर कर दिया मगर यह क्या ????? जो सूचनाएँ मुझे त्वरित प्रभाव से मिल जाया करती थीं अब मैं उनसे अन्जान हो चुका था। सहकर्मियों से चर्चा की तो ज्ञात हुआ ग्रुप में तो आया था.... ! मरते क्या न करते !! मैं समझ गया इसको न ही उगला जा सकता है न ही निगला जा सकता है। मुझे व्यक्तिगत रूप से डिजिटल वार्तालाप नापसंद है, मगर अब अधिकतर जानने

पहचानने वाले फेसबुक, वाट्सएप, इंस्टाग्राम इत्यादि में ही मशरूफ रहते हैं तो मैं क्या करूँ ??? क्या मैं अप्रचलित हो चुका हूँ ?? क्योंकि मुझसे यह नहीं हो पाएगा ??? फिलहाल तो 'अमृतवाणी' है न ?? हाँ अपनी 'अमृतवाणी' जहाँ पर मैं अपने विचार उन्मुक्त रूप से रख सकता हूँ। सही मायने में पढ़ना और लिखना दोनों हमारे बौद्धिक विकास हेतु अत्यंत अहम हैं। इनमें हम सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। जब की दूसरी तरफ TV या अन्य मंचों पर हम निष्क्रिय होकर भाग लेते हैं। खैर जाने दीजिए, हम तो संतुलन की बात कर रहे थे। अहो भाग्य हैं हमारे कि हमें मानव जीवन प्राप्त हुआ है और इसको अपने तरीके से जीना हम सभी का हक है। आप में से कई पाठको ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में सुना होगा। यह विज्ञान की नवीनतम उपलब्धियों में से एक है। मगर क्या आप जानते हैं ए.आई. ने चुपचाप हमारे जीवन में प्रवेश कर लिया है। आपने अनजाने में भी गूगल या यू-ट्यूब पर कुछ दर्ज किया नहीं कि उस विषय के निमंत्रण आपके पास आने लगेंगे। आपकी रुचि, पसंद जो सिर्फ आपकी थी, वह अब एक अनजान ताकत बन चुकी है। वह बार-2 आपके यू-ट्यूब का दरवाज़ा खट-खटाएगी - आप पुनः देखेंगे।

अगर विषय संगीत, खेल या मनोरंजन से संबंधित है तो फिर भी गनीमत है..... लेकिन अगर वह कोई विचार अथवा सोच है तो धीरे-धीरे हमारे आप पर हावी होती जा रही है। हमारे विचार अब हमारे न होकर किसी और द्वारा संचालित हो रहे हैं। हमारा मस्तिष्क जो कि हमारी सबसे बहुमूल्य धरोहर है वह कमजोर व शिथिल हो रहा है क्योंकि उसने स्वयं की उन्मुक्त सोच जो हर नूतन विचार को परखकर सही गलत का तालमेल बिठाती थी, अब वह अपने अनजान मित्र की खट-खटाहट का गुलाम बनकर रह गई है। डिजिटल युग में आप तक कोई भी सरलता से पहुँच सकता है। संयुक्त परिवार से हम एकल परिवार तक पहुँचे और अब एकल परिवार से बिलकुल एकल होने की ओर अग्रसर हैं। एक घर के दो सदस्य भी अगल बगल बैठकर मोबाइल का

लुत्फ उठाते पाए जाते हैं। रिश्ते की अहमियत अब मोबाइल ने ले ली है। तालमेल बिगड़ रहा है। जनाब, समस्या गंभीर है और शायद इसका उपचार भी सहज नहीं है। प्रातः काल से ही ज्ञान आपके समक्ष मुँह बाएं खड़ा रहता है, किसी न किसी विचार या मैसेज के रूप में। आपका मस्तिष्क विचारों की नूतनता से परे होता जा रहा है। हम स्वतंत्र होकर भी अनजान बेड़ियों में जकड़े हुए हैं। कुछ न कुछ तो अवश्य करना होगा !! क्या हम यूँ ही आभासी स्वतंत्रता में जीते रहेंगे ??

आज के दौर में प्रोपेगेंडा व भ्रम का मायाजाल है। झूठ को सच बड़ी ही निपुणता से बना दिया जाता है। हम किसके हाथों व इशारों में खेल रहे हैं, ज्ञात भी नहीं होता ??? हमें किसी भी सूचना, तथ्य या घटना पर त्वरित प्रतिक्रिया से बचना होगा। हमें अपने अनुभव, हमारी शिक्षा, हमारे परिवेश की कसौटी में कस कर ही सही या गलत का भेद सुलझाना होगा न कि पूर्व धारणा से ग्रसित होकर। सूरज पूर्व में उगता है और उगता रहेगा - यह एक अनन्त सत्य है। हम सभी जीवन के अनुभव रूपी सागर में अत्यंत सक्षम हैं सही-गलत के तराजू को मापने में। हमें किसी मायावी विचार या सोच का उत्प्रेरक नहीं बनना है। थोड़ी सहनशीलता, सजगता का परिचय देना होगा। यकीन मानिये यह जो ज्ञान और तर्क के चौधरी चारों ओर मशरूम की भाँति पनप रहे हैं चाहे देश हो या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, इनका हमें खोखला करने का प्रयास कभी भी सार्थक नहीं हो पाएगा। और जब हम स्वयं सतर्क रहेंगे तभी हम अपनी नई पीढ़ी को सही विरासत दे पाएंगे। युवा कौतुहल से भरपूर व चंचल हैं, उनके अपने जटिल तर्क हैं, हमें उनका ज्ञान व मार्गदर्शन करना होगा। और यह तभी संभव होगा जब हम स्वयं सक्षम होंगे।

नहीं जानता कि मैं अपनी बात सही तरीके से आपके समक्ष प्रस्तुत कर पाया या नहीं - मगर इतना आश्वस्त हूँ कि आप सही - गलत का भेद करने में पूर्णतयः सक्षम है। आज के युग में यह नितांत अनिवार्य है। हमें विकासपथ पर मानव को ओर आगे लेकर जाना है परंतु थोड़ी सतर्कता पूर्वक - एक सुंदर भविष्य की ओर। यकीनन हम इसमें सफल होंगे.....

## जीवन, दर्शन और सशक्तिकरण पर एपिक्टेटस के उद्धरण



श्री बिजु श्रीधर  
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एपिक्टेटस हेलेनी काल के एक यूनानी स्टोइक दार्शनिक थे। उनका जन्म 55 ई. के आसपास हीरापोलिस (वर्तमान तुर्की) में एक गुलाम के रूप में पैदा हुए थे और वे एक अमीर घराने में काम करते थे। उनसे अनुमति लेकर, उन्होंने दर्शनशास्त्र के बारे में सीखा और महसूस किया कि इसे सिर्फ स्कूली विषय के बजाय जीवन जीने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उस समय के अन्य दार्शनिकों की तरह, ऐतिहासिक दस्तावेजों और मार्कस ऑरेलियस के साथ उनके जुड़ाव के कारण जीवन, दर्शन और बहुत कुछ के बारे में एपिक्टेटस के उद्धरण प्रचुर मात्रा में हैं।

एपिक्टेटस स्टोइकिज़्म में विश्वास करते थे, जो एक प्राचीन विचारधारा है। यह विनाशकारी भावनाओं पर काबू पाने के साधन के रूप में तथा

आत्म-नियंत्रण और दृढ़ता के विकास को सिखाता है। यह भावनाओं को प्रतिस्पर्धात्मक रूप में बुझाने की कोशिश नहीं करता है, बल्कि उन्हें एक आकस्मिक असंतोष द्वारा बदलने की कोशिश करता है जो एक व्यक्ति को स्पष्ट निर्णय, आंतरिक शांति और पीड़ा से स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। एक वयस्क के रूप में एपिक्टेटस को गुलामी से मुक्त कर दिया गया और वे रोम में दर्शनशास्त्र पढ़ाने लगे। हालाँकि, रोमन सम्राट डोमिनियन ने सभी दार्शनिकों को निर्वासित कर दिया, इसलिए एपिक्टेटस को ग्रीस भागना पड़ा।

एपिक्टेटस के कई विचारों और विश्वासों को उनके एक शिष्य एरियन ने प्रलेखित किया था। एपिक्टेटस के ये प्रसिद्ध और लोकप्रिय उद्धरण आज के छात्रों और स्टोइक दर्शन के अनुयायियों के साथ-साथ आम लोगों के बीच बातचीत को बढ़ावा देते हैं, जो बस इस बात के लिए प्रेरणा चाहते हैं कि कैसे एक अधिक निडर जीवन जिया जाए।

1. “धन का अर्थ बहुत सारी संपत्ति होना नहीं है, बल्कि कम इच्छाएँ होना है।”

2. “अपने दर्शन की व्याख्या मत करो। उसे अपनाओ।”

3. “यह मायने नहीं रखता कि आपके साथ क्या होता है, बल्कि यह मायने रखता है कि आप उस पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं।”

4. “तुम एक छोटी सी आत्मा हो जो एक लाश को इधर-उधर ले जा रही हो।”

5. “ईश्वर ने मुझे खुद को सौंप दिया है। कोई भी व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है जो खुद का स्वामी नहीं है। एक व्यक्ति को इस तरह जीना चाहिए कि उसकी खुशी बाहरी चीजों पर जितना संभव हो उतना कम निर्भर हो। दुनिया किसी भी ऐसे व्यक्ति को जाने देती है जो जानता है कि वह कहाँ जा रहा है।”

6. “पहले जो आप कहते हैं उसका अर्थ समझें और फिर बोलें।”

7. “किसी व्यक्ति के लिए यह सीखना असंभव है कि वह क्या सोचता है कि वह पहले से ही जानता है।”

8. “अधिकांश समय चुप रहो, और जब बोलना जरूरी हो तभी बोलो, और वह भी संक्षेप में।”

9. “अपने बेटों को धनी बनाने की अपेक्षा सुशिक्षित करो, क्योंकि सुशिक्षित की आशा अज्ञानी के धन से बेहतर है।”

10. “जो खुद पर हंसता है, उसके पास हंसने के लिए चीजें कभी खत्म नहीं होतीं।”

11. “कुछ भी तुम्हें रोक नहीं सकता। कोई भी तुम्हें रोक नहीं सकता। क्योंकि तुम्हारी अपनी इच्छा हमेशा तुम्हारे नियंत्रण में होती है।”

12. “जो तुम्हारे वश में है उसका सर्वोत्तम उपयोग करो, और बाकी जैसा होता है वैसा ही स्वीकार करो।”

13. “सुखों का विरोध करना बुद्धिमानों का स्वभाव है, लेकिन उनका गुलाम बनना मूर्खों का स्वभाव है।”

14. “छोटी सोच वाले लोग दूसरों को दोष देते हैं। औसत दर्जे के लोग खुद को दोष देते हैं। बुद्धिमान लोग सभी दोषों को मूर्खता के रूप में देखते हैं यदि आप सुधारन करना चाहते हैं तो मूर्ख और बेवकूफ समझे जाने से संतुष्ट रहें।”



15. “घटनाओं को अपनी इच्छानुसार घटित होने की कोशिश मत करो, बल्कि यह चाहो कि वे उसी प्रकार घटित हों, जैसा वे घटित होती हैं, और तुम्हारे साथ सब अच्छा होगा।”

16. “प्रगति भाग्य या दुर्घटना से नहीं, बल्कि प्रतिदिन स्वयं पर काम करने से प्राप्त होती है।”

17. “जहाज को एक लंगर पर नहीं चलना चाहिए न ही जीवन को एक उम्मीद पर।”

18. “हमारे साथ जो घटित होता है, उससे हम परेशान नहीं होते, बल्कि

हमारे साथ जो घटित होता है, उसके बारे में हमारे विचारों से परेशान होते हैं।”

19. “हालांकि हम यह नियंत्रित नहीं कर सकते कि हमें कौन सी भूमिकाएं सौंपी जाती हैं, लेकिन यह हमारा काम होना चाहिए कि हम अपनी दी गयी भूमिका को यथा संभव श्रेष्ठ तरीके से निभाएं और इसके बारे में शिकायत करने से बचें। आप जहां भी हों और जिस परिस्थिति में हों अपना प्रदर्शन बेदाग बनाएं।”

20. “यदि कोई आपसे कहे कि कोई व्यक्ति आपके बारे में बुरा-भला कहता है, तो आपके बारे में कही गई बातों के बारे में बहाने मत बनाइए, बल्कि जवाब दीजिए, ‘वह मेरी अन्य गलतियों से अनभिज्ञ था, अन्यथा वह केवल इनका ही उल्लेख नहीं करता।”

21. “पहले अपने आप से कहो कि तुम क्या क्या बनना चाहते हो; और फिर वही करो जो तुम्हें करना है।”

22. “कुंजी यह है कि केवल उन लोगों के साथ संगति रखें जो आपको ऊपर उठाते हैं, जिनकी उपस्थिति आप को सर्वश्रेष्ठ बनाती है।”

23. “स्वतंत्रता ही जीवन का एकमात्र सार्थक लक्ष्य है। इसे उन चीजों को नजरअंदाज करके जीता जाता है जो हमारे नियंत्रण से बाहर हैं।”

24. “केवल शिक्षित लोग ही स्वतंत्र हैं।”

25. “लोग चीजों से परेशान नहीं होते, बल्कि उनके बारे में अपने विचारों से परेशान होते हैं।”

26. “कठिनाइयाँ ऐसी चीजें हैं जो किसी व्यक्ति को दिखाती हैं कि वह क्या है।”

27. “इच्छा और खुशी एक साथ नहीं रह सकते।”

28. “मैं उन लोगों पर हंसता हूँ जो सोचते हैं कि वे मुझे नुकसान पहुँचा सकते हैं। वे नहीं जानते कि मैं कौन हूँ, वे नहीं जानते कि मैं क्या सोचता हूँ, वे उन चीजों को छू भी नहीं सकते जो वास्तव में मेरी हैं और जिनके साथ मैं रहता हूँ।”

29. “दूसरों के विचार और परेशानियाँ संक्रामक हो सकती हैं। दूसरों के साथ अपने संबंधों के माध्यम से अनजाने में नकारात्मक, अनुत्पादक दृष्टिकोण अपनाकर खुद को नुकसान न पहुँचाएँ।”

30. “अस्थायी प्रयास अस्थायी परिणाम की ओर ले जाते हैं।”

31. “सभी धर्मों को सहन किया जाना चाहिए...क्योंकि हर व्यक्ति को अपने तरीके से स्वर्ग जाना चाहिए।”

32. “बाहरी चीजों में अच्छाई मत तलाशो; उसे अपने अंदर तलाशो।”

33. “मदद पाने का सबसे अच्छा स्थान खुद से ही है।”

34. “अपने दुर्भाग्य के लिए दूसरों को दोषी ठहराना शिक्षा की कमी का संकेत है। खुद पर आरोप लगाना दर्शाता है कि व्यक्ति की शिक्षा शुरू हो गई है। न तो खुद पर और न ही दूसरों पर आरोप लगाना दर्शाता है कि व्यक्ति की शिक्षा पूरी हो गई है।”

35. “खुशी और व्यक्तिगत संतुष्टि सही काम करने का स्वाभाविक परिणाम हैं।”

\*\*\*\*\*

## मैनिफेस्टेशन की शक्ति:

### अवचेतन मन को अनलॉक करना



सुश्री जे आर मालविका  
मुपुत्री राखी पी ओ ,स. लेप.अधिकारी

मैनिफेस्टेशन, विचारों को वास्तविकता में बदलने की प्रक्रिया, एक ऐसी अवधारणा है जिसने व्यापक ध्यान आकर्षित किया है। यह विश्वास है कि हम अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं को केंद्रित इरादे के माध्यम से जीवन में ला सकते हैं, मैनिफेस्टेशन हमारे अवचेतन मन की गहन क्षमताओं का उपयोग करता है। इस संबंध को समझने पर व्यक्तियों को अधिक सचेत और संकल्पपूर्वक अपने जीवन को आकार देने की शक्ति मिलती है।

मैनिफेस्टेशन के मूल में यह विचार है कि विचारों और भावनाओं में कंपन आवृत्तियाँ होती हैं जो ब्रह्मांड के साथ बातचीत करती हैं। इन आवृत्तियों को हमारी इच्छाओं के साथ संरेखित करके, हम संबंधित अनुभवों और अवसरों को आकर्षित कर सकते हैं। यह सिद्धांत, जिसे अक्सर आकर्षण के नियम में संक्षेपित किया जाता है, यह सुझाव देता है कि समान, समान को आकर्षित करता है। सकारात्मक विचारों और भावनाओं को सकारात्मक परिणाम लाने के लिए माना जाता है, जबकि नकारात्मक विचार प्रतिकूल परिणाम दे सकते हैं।

इस प्रक्रिया में अवचेतन मन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके विपरीत, जो चेतन मन

विक्षेपणात्मक और साभिप्राय होता है, अवचेतन स्वचालित रूप से संचालित होता है, विश्वासों, स्मृतियों और आदतों को संग्रहीत करता है। यह हमारे व्यवहारों और धारणाओं के प्रति हमें पूरी तरह से जागरूक करके प्रभावित करता है। जब हम विशिष्ट लक्ष्यों या इच्छाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम प्रभावी रूप से अपने अवचेतन के साथ संवाद कर रहे होते हैं, उसे उन इरादों के साथ संरेखित अवसरों को पहचानने के लिए प्रोग्राम कर रहे होते हैं।

दृश्यकरण मैनिफेस्टेशन में एक शक्तिशाली उपकरण है। अपने लक्ष्यों की जीवंत कल्पना करके, हम मानसिक छवियाँ बनाते हैं जिनसे अवचेतन मन जुड़ सकता है। ये छवियाँ ब्लूप्रिंट के रूप में कार्य करती हैं, जो हमारे कार्यों और निर्णयों को हमारी इच्छाओं की प्राप्ति की दिशा में मार्गदर्शन करती हैं। ये दृश्यकरण जितने अधिक विस्तृत और काल्पनिक रूप से आवेशित होते हैं, वे उतने ही प्रभावशाली बनते हैं। कल्पना एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है, हमारे विचारों की कंपन आवृत्ति को तीव्र करती है और उनके प्रभाव को बढ़ाती है। सकारात्मक कथन अवचेतन मन को पुनः प्रोग्राम करने की एक अन्य तकनीक है। सकारात्मक वक्तव्य, लगातार

दोहराए जाने से सीमित विश्वासों को अधिलेखित कर सकते हैं और नए, सशक्त विश्वासों को सुदृढ़ कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, "मैं आत्मविश्वासी और सक्षम हूँ" को दृढ़ता से कहने से धीरे-धीरे आत्म-धारणा को बदला जा सकता है, जो सफलता के अनुकूल मानसिकता को बढ़ावा देता है। प्रभावी कथनों की कुंजी उनके वर्तमान-काल के निर्माण और भावनात्मक प्रतिध्वनि में निहित है। उन्हें विश्वास के साथ बोला जाना चाहिए और गहराई से आत्मसात किया जाना चाहिए।

कृतज्ञता भी मैनिफेस्टेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारे पास जो पहले से है उसके लिए आभार व्यक्त करके, हम एक सकारात्मक मानसिकता को विकसित कर सकते हैं। कृतज्ञता जो हमारे पास है उस पर हमारा ध्यान संकेंद्रित करती है न कि उस पर जो हमारे पास नहीं है। यह हमारी कंपन आवृत्ति को बढ़ाती है और हमें हमारी इच्छाओं की ऊर्जा के साथ संरेखित करती है। एक कृतज्ञता नोट बनाए रखकर, जहाँ हम नियमित रूप से उन चीजों को नोट कर सकते हैं जिनके लिए हम आभारी हैं, इसके प्रभाव को बढ़ा सकता है और इससे मैनिफेस्टेशन अधिक प्रभावी हो सकता है।

हालांकि, यह स्वीकार करना आवश्यक है कि मैनिफेस्टेशन एक जादुई पथ नहीं है जिससे प्रयास और कार्रवाई से बचकर निकल सकते हैं। यह उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई के साथ मिलकर काम करती है। स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करना, उनकी दिशा में लगातार कदम उठाना और अवसरों के लिए खुले रहना मैनिफेस्टेशन प्रक्रिया के महत्वपूर्ण

घटक हैं। अवचेतन मन हमें मार्गदर्शन कर सकता है, लेकिन हमें इसके संकेतों पर कार्य करना होता है।



संशयवादी मैनिफेस्टेशन को छद्मविज्ञान के रूप में खारिज कर सकते हैं, लेकिन इसके सिद्धांत अच्छी तरह से स्थापित मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं के साथ संरेखित होते हैं। सकारात्मक सोच की शक्ति, दृश्यकरण का प्रभाव, और व्यवहार पर विश्वासों का प्रभाव सभी शोधों द्वारा समर्थित हैं। जबकि मैनिफेस्टेशन के आध्यात्मिक पहलुओं पर बहस हो सकती है, इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग निस्संदेह हैं।

अंत में, मैनिफेस्टेशन एक शक्तिशाली उपकरण है जो अवचेतन मन का उपयोग करके इच्छाओं को वास्तविकता में बदलता है। सकारात्मक विचारों, दृश्यकरण, कथनों, और कृतज्ञता की शक्ति का उपयोग करके, हम अपनी इच्छाओं की ऊर्जा के साथ संरेखित हो सकते हैं। संकल्पपूर्वक कार्रवाई के साथ मिलकर, मैनिफेस्टेशन हमें अपने जीवन को अधिक इरादतन रूप से आकार देने में मदद कर सकता है, हमारे अवचेतन मन के भीतर विशाल संभावनाओं को अनलॉक कर सकता है।

A detailed illustration of a classic oil lamp. It features a large, clear glass chimney protected by a wire mesh cage. The lamp has a dark metal frame with a sturdy handle on top and side handles. The base is a dark, circular metal plate. The overall design is functional and traditional.

A black and white photograph of a steam locomotive, numbered 31652, on a track. The locomotive is dark-colored with a large smokestack and a prominent front wheel. It is surrounded by trees and foliage.

इंजन से चलने वाली ट्रेनों से (भाप इंजन) होती थी। ट्रेन से रात भर की यात्रा के पश्चात किसी को पहचानना मुश्किल हो जाएगा क्योंकि मंजिल तक पहुंचते-पहुंचते खुद कोयला बन चुका होगा। फिर यह, डीजल इंजन और इलेक्ट्रिक इंजन का जमाना आ गया। अब तो बहुत तेज चलने वाली वंदे भारत ट्रेन और यहाँ तक कि बलेट ट्रेन भी आ गयी है।

इससे हमारा समय बचता है और यह बहुत आरामदायक भी है।

**वयस्कता:** इस समय मनोरंजन का साधन कभी-कभार फिल्में देखना था। रेडियो में कार्यक्रम सुनते थे, फिर गाने सुनने के लिए टेप रिकॉर्डर और धीरे-धीरे ब्लैक एंड व्हाइट टेलीविजन का आगमन हुआ



। अब हमारे पास मनोरंजन के साधन के रूप में एलईडी टीवी, मोबाइल नेटवर्क, वाई-फाई और न जाने क्या-क्या है।

सेवा में प्रवेश करते समय कलम-कागज, मैनुअल टाइपराइटर और तत्पश्चात् इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर के सहारे काम चलता था। लेकिन जब-जब गलतियाँ होती दोबारा टाइप करना पड़ता जब तक कि अंतिम सही प्रति उपलब्ध न हो। बाद में तो कंप्यूटर के उपयोग से यह काम आसान हो गया और इससे संबंधित पत्राचार भी सुविधाजनक हो गए। आजकल संपर्क ईमेल, मोबाइल आदि माध्यम से होता है, जिससे कम समय में काम निष्पादित हो जाता है। पहले पत्रों के माध्यम से रिश्तेदारों और दोस्तों से संपर्क करते। बाद में

लैंडलाइन फ़ोन से होता। यह स्थानीय, ट्रंक, एसटीडी और आईएसडी कॉल के माध्यम से होता था, लेकिन इसे कनेक्ट करने में काफी समय लगता था। बाद में लैंडलाइन फ़ोन के लिए आवेदन देते ही मिलने लगा। पहले मोबाइल बातचीत के लिए ही प्रयोग होता था। आगे उन्नत तकनीक के कारण हमारे पास बहुत फीचर्स वाले मोबाइल आए जिससे किसी भी समय, कहीं से भी कोई भी सेवा उंगली की नोक पर की जा सकती है। दूर या निकट, किसी से भी आमने-सामने बातचीत संभव है, जिससे दूरी महसूस नहीं होती। आजकल संपर्क ईमेल, फ़ोन आदि माध्यम से होता है।

उम्र बढ़ते-बढ़ते बीते हुए पल फ्लैशबैक होकर सामने आते हैं। जिन सड़कों और मैदानों पर हम अपने अतीत में चलते और खेलते थे, वह अब राष्ट्रीय राजमार्ग, सुपर हाईवे और न जाने क्या-क्या रूपान्तरण हुआ हैं। पता नहीं हमें अभी और क्या-क्या घटनाक्रम देखने बाकी है। मूक पीढ़ी/परंपरावादी माता-पिता को बेबी बूमर्स या जेनरेशन X जैसे पैदा होकर, जेनरेशन Y या मिलेनियल्स के मां-बाप के रूप में अपना जीवन बिता रहे हैं। वैसे भी तो परिवर्तन को स्वीकार करना होगा क्योंकि यह हमेशा हमारे जीवन में था, है और रहेगा। मगर अब ऐसा लगता है कि निकट



भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव महाशक्ति पर काबू पा लेगी। हमें इसका हिस्सा बनकर आगे बढ़ना है।

\*\*\*\*\*

## मेरे प्यारे पगु.....



**विनय विनोद**

**सुपुत्र श्रीमति निशा पिल्लई जी**

पगु हमारी ज़िंदगी में करीब दो साल पहले, एक क्रिसमस की रात को आया। उसे हमारे दरवाज़े के बाहर, मेरे लिए उपहार के तोर पर सांता क्लॉस (उर्फ़ मेरे पापा) छोड़ गए थे। तब वह बस एक महीने का था। इतना छोटा था कि मेरे दोनों हथेलियों में सिमट जाता था। पग ब्रीड का होने के कारण, उसे देखते ही मेरी माँ ने उसे 'पगु' बुलाना शुरू कर दिया। किसीको और कोई नाम भी नहीं सूझा और वह आधिकारिक तौर पर 'पगु' बन गया।



वैसे देखा जाए तो, अगर पगु को दूसरे पालतू कुत्तों के नाम सुनने और समझने का ज्ञान होता, या उसकी ज़िन्दगी में नाम की कोई एहमियत होती, तो दूसरे कुत्तों के नाम सुनकर उसे तगड़ा कोम्प्लेक्स हो जाता। लोकि, विस्की, मावेरिक, डीज़ल, शाडो, सिम्बा ..... इस तरह के नाम होते हैं आज कल के पालतू कुत्तों के। और यहाँ इसका नाम रहा पगु! वैसे मैं माँ से झगड़ा तो करता हूँ कि इतना सिंपल सा नाम क्यों रखा? लेकिन मन ही मन मुझे पता है कि इसके लिए सबसे अच्छा नाम यही हैं - पगु..... छोटा सा, प्यारा सा नाम.... जैसे वह खुद है।

पगु के आते ही, मैं घर में सबसे छोटे से मंझला बन गया हूँ, जोकि एक तरह का 'नो मान'स लैंड' (no man's land) है। वैसे तो वह मेरे लिए लाया गया था; लेकिन वह हमेशा माँ के साथ चिपका रहता है - बिल्कुल साये की तरह। माँ जब उठती हैं, तो वह भी उठ जाता है और जब सोती हैं, तो वह भी सो जाता है। घर में जहाँ माँ हो, वहीं पर कहीं उनके इर्दगिर्द पगु भी होगा। माँ अगर एक कमरे से दूसरे कमरे में जाए, वह भी पीछे पीछे चल देता है। माँ ऑफिस से आती है, तो वह

अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर, दोनों अगले पैर माँ के घुटनों पर रख देता है और माँ की तरफ देखकर उसे उठाने की माँग करता है। एक बार माँ ने उसे उठा लिया तो बस फिर उसे बालकनी जाना है ..... और रेलिंग पर बैठकर बाहर के नज़ारे देखने है.... ।

पगु के पास कोई जादूई आकर्षण है जिससे वह सबका मन मोह लेता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण तो मेरे दादाजी है। पहले वे घर में कुत्ता पालने के सख्त खिलाफ थे। हमसे शिकायत करते थे कि पगु ये कर रहा है..... वो कर रहा है.... पढाई से ध्यान हटा रहा है.... घर तहस-नहस कर रहा है.... । पता नहीं पगु ने उन पर कौन सी जादू चलाई कि आज मेरे दादाजी पगु के सबसे बड़े चहीते बन गए हैं। अब हाल यह है कि कहीं बाहर जाने के लिए उनको बुलाए तो मना कर देते हैं और कहते हैं कि पगु अकेला हो जाएगा !

पगु अपने साथ कितनी खुशियाँ हमारी ज़िंदगी में लाया हैं, ये बयां करना मशकिल है। हम हमेशा इस गलतफहमी में रहते हैं कि हम बड़े अच्छे इन्सान हैं जो अपने पालतू जानवरों का ख्याल

रखते हैं, उनकी अच्छी देखभाल करते हैं। लेकिन मेरे राय में पालतू जानवर, खासकर कुत्ते, जो हमारे लिए करते हैं, उसके सामने, हम जो भी उनके लिए करते हैं, वो फीका पड़ जाता है। शायद ही कोई ऐसा हो जो इस कदर हम इन्सानों का जशन मनाता हो। आप अगर नुक्कड़ वाले दूकान से भी घर लौट रहे हो, वो आपको देखकर इतना खुश होता है और इस तरह आपका स्वागत करता है, मानो आप हफ्तों-महीनों बाद कोई जंग जीतकर लौटे हो।

मनुष्य कुत्तों से बहुत सी बातें सीख सकते हैं जैसे वर्तमान समय में कैसे जीना है, कैसे वफादार रहना है और कैसे जीवन के सामान्य सुखों का आनंद लेना है। इसीलिए शायद मार्क ट्वेन (Mark Twain) ने कहा था कि "कुत्ता एक सज्जन व्यक्ति है। मैं उसके स्वर्ग जाने की आशा करता हूँ, इन्सान का नहीं।"

पगु हमारी पूरी ज़िन्दगी तो नहीं हैं, लेकिन वो हमारे जीवन को सम्पूर्ण बनाता है ! अगर मुझमें पगु की अच्छाईयां आ जाती तो मैं और अधिक अच्छा इन्सान बन पाता, मुझमें दुगनी इन्सानियत आ जाती !

\*\*\*\*\*



## अमावास में पूर्णिमा



श्रीमती बिंदु के एन. पर्यवाक्षक

**शाम** हो गई तो एक-एक करके सब हॉस्टल के गेट से अंदर आने लगे। हमें सात बजे तक ही बाहर घूमने की इजाजत थी। लेकिन बगल के पुरुष छात्रावास में समय की ऐसी कोई पाबंदी नहीं थी। ये सब देखकर आपको महसूस होगा कि आपको लड़की के रूप में जन्म नहीं लेना चाहिए था। वैसे भी, आज "हिमा" ने नियम तोड़ दिया है, साढ़े आठ बज चुके हैं.. वार्डन अपनी घड़ी देखते हुए इधर-उधर टहलने लगी।

वह इतनी देर क्यों कर रही है...? कभी इतनी देर नहीं हुई। समय पर पहुंच जाती थी। मन ही मन हम भी घबराने लगे। जब भी कोई ऑटो आता है, हम झांकते हैं; निराश होकर लौटते हैं, हे भगवान... कोई अनहोनी न हो उसके साथ... मैंने दुआएं मांगी। गर्मी के कारण थोड़ी हवा खाने के लिए हम सब बरामदे में बैठे थे.... वार्डन ने अपना गुस्सा हम पर निकाला। चिल्ला उठी कि सब कमरे में जाए। फिर बड़-बड़ाने लगी कि आजकल की लड़कियों में तमीज जैसी कोई चीज ही नहीं। तभी हिमा एक ऑटो में आ उतरी। उसको देखकर मन को ठंठक पहुंची। इतनी देर क्यों लगायी .... इस सवाल के साथ मैं आगे बढ़ी – वार्डन घुरते हुए बोल उठी : अब यहां केवल हिमा रहेगी और बाकी

सभी लोग अपने कमरे में चले जाओ.... अभी ! आज्ञा ऐसे देती है जैसे हम कोई नर्सरी के बच्चे हैं.... हिमा के सामने सवालों की कतार लग गयी। इतनी देर तक कहाँ थी, क्या तुम्हें समय पर हॉस्टल पहुंचना नहीं आता ? तुम्हारी मनमानी यहाँ नहीं चलेगी, अगर ऐसे ही रहना हो तो कोई और जगह ढूँढ सकती हो...! आईदा न दोहराने की चेतावनी देकर वार्डन चली गई। हम उसके कमरे के सामने खड़े होकर उसके आने का इंतज़ार कर रहे थे। देखते ही उसने कहानी सुनानी शुरू की, जिस बस में वह आ रही थी उसमें एक आदमी ने बहुत अभद्र व्यवहार किया तो सभी यात्री शोर मचाते हुए बस को सीधे थाने ले गए। वहाँ पहुंचने पर सभी यात्रियों, खासकर महिलाओं ने महिला पर ही अपराध करने का आरोप लगाया। यह भी सच है कि कुछ हद तक महिलाएँ ही महिलाओं की दुश्मन होती हैं। लेकिन हिमा ने कहा कि उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की। महिलाओं पर इस तरह के अत्याचार के कारण कितनी महिलाएँ दिन में भी सफर करने के लिए डरती हैं।

हम लड़कियों ने समाज के दुरंगेपन को पहचानने और उसको पर्दाफाश करने का निर्णय

लिया। इसलिए उनमें से प्रत्येक ने रात की कठिन परिस्थितियों में अकेली यात्रा करने और रात और दिन के सफर में क्या फर्क है, इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए एक रात चुनी। हमने अमावास में पूर्ण चंद्र की तलाश में अपनी यात्रा शुरू की। इस शर्त के साथ कि हममें से प्रत्येक हमें बताएगा कि रात के दृश्य क्या थे। 'अगर्णा' नाम की मैं भी इस यात्रा का हिस्सा बनी। हमने आपस में अपना-अपना अनुभव बाँटने का फैसला किया। एक-एक करके रात के विभिन्न पहरों में तन्हा सफर करने, सच्चे और यथार्थ परिस्थितियों से गुजरने, स्वयं उन अनुभवों को परखकर अमावास में पूर्णिमा तलाशने की तयारियाँ हम करने लगे। लेकिन हमारे बीच अभी भी एक सवाल था। वार्डन की नजर से कैसे बच निकले? सभी ने विचार-विमर्श किया। हमें मालूम था कि शाम होते ही वार्डन भगवान की आरती उतारने के लिए अपने कमरे में चली जाती है; कम से कम एक घंटे के लिए उनकी पूजा चलती है। उस समय एक-एक करके बाहर निकलने का फैसला किया गया। एक-एक करके बारी-बारी में सब उस समय बाहर जाने लगी। आखिरकार मेरी बारी आ गयी। इस यात्रा के दौरान क्या-क्या नजारे मैंने देखें .... कैसे-कैसे अनुभवों से मुझे गुजरना पड़ा, यह मैं आप सब के साथ बाँटना चाहती हूँ। इस बेहद खास यात्रा के लिए सुबह से ही तैयारियाँ शुरू हो गईं। लेकिन समय तो आगे बढ़ ही नहीं रहा था। आखिर जिस क्षण का मुझे इंतज़ार था वह आ ही गया। जब मैं हमारे सुनसान राजपथ से गुजर रही थी, सबसे पहले मन में यह ख्याल आया था कि धरती कितनी सुंदर है। दिन की हलचल से दूर शांति से तारों को देख रही शालीन सुंदर धरती। इस नजारे का लुत्फ उठाए नहीं थकेंगे। ढलती शाम मैं खोयी हुई सी जा रही थी, अचानक बिन बुलाए मेहमान की तरह आयी बारिश धरती के नंगे बदन पर चित्र रचने

लगी। जितनी तेजी से आयी उतनी तेजी से बरसकर चली भी गयी। खुले आसमान में बादल एक दूसरे से प्यार करने लगे। धीरे-धीरे रात की पगधवनियाँ नजदीक आने लगी। हताश आदमी की मुस्कराहट की तरह बल्ब जलने लगे। यह एक ऐसी रात है जिसमें नींद को मेरी पलकें छूने की इजाजत नहीं है। मैं रास्ते पर धीरे-धीरे चल रही थी। हल्की सी रोशनी में मेरी नजर एक युवक पर पड़ी, ऐसा लगा कि वह किसी घर की खिड़की के पास किसी का इंतज़ार कर रहा हो और सन्नाटे की आड़ में दुःख से कराह रहा हो। मैंने अपने कदम आगे बढ़ाए। कुछ देर बाद मुझे पीछे कुछ आहटें सुनाई दीं। मैंने पीछे पलटकर देखा। लेकिन कुछ भी दिखायी नहीं दिया। मैं फिर से चलने लगी, अचानक मेरे सामने दो राहगीर नजर आए। मुझे कुछ गड़बड़ महसूस हुई, मैं पास के बस स्टैंड पर गयी, वहाँ दो भिखारी सो रहे थे और उनमें से एक बार-बार खांसता जा रहा था और उसे सांस लेने में दिक्कत हो रही थी। तभी मुझे दो पुलीसवाले दिखायी दिए। वे सड़क के दोनों ओर टोर्च जलाकर देख रहे थे। मेरी हिम्मत बढ़ गयी। कुछ देर वहीं खड़ी रहकर सुनिश्चित किया कि वहाँ कोई नहीं है और फिर चल पड़ी। पुलीसवालों को सावधान रहते देखकर उनके लिए सम्मान और भी बढ़ गया।

मैं दृढ़ कदमों से आगे बढ़ी। थोड़ी देर में समन्दर के किनारे पहुँच गयी। वहाँ तब भी कुछ लोग इधर उधर बैठे हुए थे। उनमें से एक बनकर मैं भी बैठ गयी। लहरें किनारे को अपने आगोश में भरने की कोशिश में लगी थी। दूर समंदर में फिशिंग बोटों में हिचकोलें ले रही लालटनें नाचती जलकन्याओं की तरह लग रही थी। गहरा नीला समंदर अपने सुंदर नजारों से मन को लुभा रहा था। उसके अनुपम सौंदर्य का पूरा लुत्फ उठाए जा रही थी कि तभी कुछ लोगों की ऊँची आवाजें मुझे

वास्तविकता के धरातल पर फिर से वापस ले आयी। दो आदमियों के बीच दिन भर उनके द्वारा मिलकर किए गए काम के मुनाफे की हिस्सेदारी को लेकर बहस छिड़ गयी थी। दिन भर जिन्होंने साथ-साथ काम किया वो रात होते ही नशे की धुन में दुश्मन बन गए। अचानक एक चीख सुनाई दी। जो लोग वहां इकट्ठे हुए थे वे तितर-बितर हो गए। उनमें से एक खून से लथपथ गिरा पड़ा था। कुछ लोग तो ऐसे चल रहे थे जैसे कुछ हुआ ही न हो। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं। जब होश आया तो मैं दौड़कर उसके पास गयी....उस शरीर की आखिरी हरकत भी नष्ट हो गयी थी। भारी मन से मैं कुछ दूर आगे बढ़ी। आगे कई दुखद दृश्य मेरा इंतजार कर रहे थे.... जिंदगी चलाने के लिए अपने शरीर को बेचनेवाले.... दिन के समय जो भीख मांगकर गुजारा करते हैं वो रात को अपने शरीर को बिकातु बना देते हैं....दूसरों का झूठा खाकर अपने पेट भरनेवाले, आवारा कुत्तों के साथ सोने वाले, उनमें से कई ऐसे भी हैं जो उन दूकानों के बरामदों, जिन पर वे रोज रात बिताते हैं उन पर अपना हक जमाए फिरते हैं। बंजारों के बच्चों को अगवा करने के लिए बाज की तरह मौके तलाशने वाले.... जालिम दुनिया से अपने बच्चों को बचाने के लिए उनको सीने से चिपकाकर सोने वाली मांओं की मातृस्नेह से भरपूर झलकियाँ.... रात की आड़ में शराब और ड्रग्स बेचने वाले लोग जो दिन के समय सज्जनों के नकाब में घूमते हैं, ऐसे लोगों को भी देखें जो गरीब बच्चों को भिक्षावृत्ति पर लगाकर रात में उनसे पैसे हड़पते हैं, रात के अंधेरे में किसी को अकेला पाया तो उनसे सब कुछ छीन लेने वाले, अकेली महिला कहीं दिखी तो उस पर आक्रमण करने वाले, रात ने अपने सीने में इतने रहस्यों को समाया है यह सच जान गयी मैं..... इन दृश्यों ने मेरे मन को बहुत उदास कर दिया। मेरा देश कब सुधरने वाला है। मेरी आंखों से आंसुओं

को मैंने हथेली से पोंछ लिया और धीरे से आगे बढ़ी। दिन में समय कितनी जल्दी बीत जाता है.... लेकिन यह रात तो खत्म ही नहीं हो रही .... मानो घोंघे की तरह रेंग रही हो। बीतते पहरों के साथ मैं भी अलसता से आगे चलती एक ऐसी जगह पर पहुंची जहां रात भी दिन में तब्दील हो गयी है.... नगर के बीचोंबीच ऐसी कौन सी जगह है ?? तब तक मेरे मन में दुःख के घने काले बादल घिरे हुए थे...अब जिज्ञासा और उत्सुकता ने उसकी जगह ले ली। अब तक जो अनुभवों से मैं गुजर रही थी उसके मुकाबले यहां का नजारा बिलकुल विपरीत लग रहा था। कुछ नौजवान लिंग की परवाह किए बिना मिलजुल कर बातें कर रहे थे ..... हंसी-मजाक कर रहे थे। बिना घर-बार की चिंता किए दोस्ती का जश्न मना रहे थे ... एक दूसरे से ऐसे जुटके बैठे हैं मानो उनको कभी अलग नहीं किया जा सकता। एक-एक स्ट्रीट लाइट के नीचे वे अपनी अनोखी दुनिया बनाए बैठे थे। कुछ लोग बैठकर पुस्तकों में आनंद ढूंढ रहे थे। कुछ युवा जोड़े ठेले वालों से डोसा लेकर चाव से खा रहे थे तो कुछ हल्के अंधेरे में दिलों का सौदा कर रहे थे और अपनी दुनिया में इतने खोए थे कि मानो वे कहां हैं... कोई उनको देख रहा है या नहीं इन सब चिंताओं से वे अपने आप को आजाद किए थे, पूरी दुनिया को भूल बैठे थे। बैठने के लिए बनी बेंचों में कुछ लोग लेटकर सपने बुन रहे थे और रंग में भंग डालने के लिए आने वाले मच्छरों को बीच-बीच में भगा रहे थे फिर सपनों में मगन हो जा रहे थे। कुछ लोग इकट्ठे बैठकर लोकगीत गा रहे थे...कुछ लोग तान में ताली बजा रहे थे तो कुछ नाच रहे थे। धूम्रपान वर्जित करने के आदेश को कुछ लोग धुआंओं में उठा रहे थे। रात के सौंदर्य को अपने कैनवास में उतारने वाले भी मिले। इन सब के बीच कुत्ते भी दिखे जो आराम से सोने की जगह तलाश रहे थे। रात की एकांत सड़कों का पूरा फायदा उठाने वाले

बाइकर्स.....इन सब चीजों से अंजान होकर दिनभर की मेहनत से थकेमांदे नींद में डूबे लोग । मैं कानून के रखवालों को फिर शाबाशी देना चाहती हूँ ....चाहे गुम हो जाने वालों की मदद करने के लिए दिखाने वाली सावधानी हो या देश में अच्छाई को कायम रखने के लिए उनके द्वारा निभाए जाते कानूनी दायित्व या तरीके, अपने अनुभव से बता सकती हूँ कि मुझे उन पर नाज पर है । ये रात मेरे लिए अनोखी है क्योंकि ऐसे कई दृश्य और अनुभव मन में अंकित हो गए हैं जिन्होंने मुझे आनंद, उदासी, उत्सुकता, बेबसी, डर, आजादी जैसी विभिन्न अनुभूतियों से मुलाकात करवायी । सुबह के आगमन की घोषणा करते हुए

पूरब में सूरज की पहली किरणें दिखायी देने लगी साथ ही पक्षियों की चहल-पहल भी शुरू हो गयी । जिस समय में मुझे बक्श दिया गया था वह बीतने लगा, मैं वापस चलने लगी । रात की घटनाओं से अनजान दिन के मुसाफिर अपने राहों पर फिर उतावले होकर चल पड़े थे । अपनी जिन्दगी को संवारने के लिए बस स्टैण्डों और रेलवे स्टेशनों की ओर भागने वाले .... भोर की हलचल में फिर एक निरीह सुबह ने नया जन्म लिया । मुझे दी गयी आजादी की रात के अंत में एक नए कल की उम्मीदों के साथ सुबह की सैर निपटाके मैं अपने घोंसले में वापस आ गयी । अमावास में पूर्णिमा को देखने का मेरा सफर यहीं खत्म हो जाता है ।

\*\*\*\*\*



## मैं भारत हूँ



**श्री गोपेश कुमार**  
**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

मैं भारत हूँ। संस्कृत में 'भा' का अर्थ है ज्ञान और 'रत' का अर्थ है लगा हुआ अर्थात् ज्ञान की खोज में लगा हुआ।

मुझे प्राचीन काल से ही सोने की चिड़िया कहा जाता रहा है, सोने की चिड़िया से तात्पर्य केवल आर्थिक संपन्नता से नहीं है, बल्कि उसकी सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं बौद्धिक प्रगति से भी है। आज, "भारत" शब्द भारत गणराज्य का आधिकारिक नाम है, जो भारतीय संविधान द्वारा स्वीकृत है। यह नाम न केवल देश की भौगोलिक और राजनीतिक पहचान को दर्शाता है, बल्कि उसकी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सभ्यतागत धरोहर को भी संजोता है।

लेकिन मेरा भारत बनने का सफर आसान नहीं रहा। मैंने शुरू से ही कई विदेशी आक्रमणकारियों का सामना किया है फिर वो चाहे देश में लूट-खसूट करने वाले ग़ज़नी और मुगल जैसे कई भेड़िये हो या देश के टुकड़े करने वाली पाश्चात्य विचारधारा। इतिहास में जो भी हुआ हो मैंने उसे एक माँ की भांति सहजता से स्वीकार किया है और जरूरत पड़ने पर माँ काली स्वरूप प्रतिशोध भी लिया है।

वर्तमान की बात करे तो मैं दुनिया में सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के मामले पांचवें स्थान पर आता हूँ।

शक्तिशाली सेनाओं के मामले में चौथे स्थान पर आता हूँ, जो कि सुनिश्चित करता है कि अब मैं ईंट का जवाब पत्थर से देने में सक्षम हूँ। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का गौरव भी मुझको ही प्राप्त है। दुनिया का सबसे बड़ा आबादी वाला देश होने के बावजूद अपनी संस्कृति, संस्कार एवं जीवन मूल्यों को कैसे जीवित रखते हैं, ये निश्चित रूप से मुझसे सीखा जा सकता है।

उत्तर में हिमालय की बर्फीली चोटियों से लेकर राजस्थान के रेगिस्तान तक, गोवा के सुंदर समुद्री तटों से लेकर केरल के हरे-भरे बागानों तक, मेरा कोना-कोना सौंदर्यता की एक अनूठी मिसाल है। पंजाब के परांठे, राजस्थान के दाल-बाटी, महाराष्ट्र की कोथिंबीर बडी, गुजरात का ढोकला और दक्षिण में इडली-सांभर एक बार अगर कोई चख लें तो शायद ही अपने जीवन में भूल पाये। और शायद यही कारण है की मैं हमेशा से ही पर्यटन के दृष्टिकोण से आकर्षण का केंद्र रहा हूँ।

मैंने विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में भी काफी प्रशस्ति हासिल की है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने कई सफल मिशन जैसे चंद्रयान और मंगलयान को अंजाम देकर दुनियाभर में मेरा परचम लहराया है। और मैं आश्चर्य हूँ कि आगे आने वाले मिशन जैसे की गगनयान की

बदौलत पूरे आसमान में मेरा झंडा शान से लहराएगा।

मैंने कई विश्वप्रसिद्ध हस्तियों फिर वो चाहे खेल जगत में हो या सिनेमा में, साहित्य क्षेत्र में हो या मनोरंजन में, को अपने गर्भ से जन्मा है। हालाँकि इस बात में भी कोई दो राय नहीं है कि मेरी कोख से कई कपूतों ने भी जन्म लिया है जिन्होंने मेरी कोख को लजाने में कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन मेरे अपने सपूतों जैसे महाराणा प्रताप, शिवाजी, भगत सिंह और अपनी वीरांगना जैसे रानी लक्ष्मी बाई, सावित्री बाई फुले का विचार मात्र ही मेरे रोम - रोम में नई ऊर्जा का संचार कर देता है।

जैसाकि सबको ज्ञात है कि मैं एक उभरती हुई महाशक्ति हूँ, लेकिन मेरे समक्ष कई चुनौतियाँ भी हैं। गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी और पर्यावरणीय समस्याएँ प्रमुख

चुनौतियों में से हैं। हालांकि, सरकार और विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रयासों से इन समस्याओं को हल करने की दिशा में निरंतर कार्य हो रहा है। मेरा भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। यहाँ की युवा जनता, नवाचार और सतत् विकास के प्रति प्रतिबद्धता से मुझे एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ा रही है।

मेरी आपसे बस इतनी अपील है कि सुधार और विकास की राह में, आप सब अपने हृदयों में प्रेम और सम्मान का दीप जलाएं। संकीर्णता और भेदभाव की दीवारें तोड़कर, एकता की राह पर चलें। जब आप सब मिलकर एक साथ चलेंगे, तभी सच्चे अर्थों में स्वर्णिम भारत का सपना साकार होगा। अपने विचारों में सहिष्णुता और कर्मों में नैतिकता को स्थान दें, क्योंकि इन्हीं से मेरी अर्थात् भारत की उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा।



## सकारात्मक पालन-पोषण



सुश्री जे आर मैथिली  
सुपुत्री राखी पी ओ, स. लेप.अधिकारी

माता-पिता होने के नाते बहुत सारी जिम्मेदारियाँ और कठिन निर्णय लेने होते हैं। आप हमेशा अपने बच्चे के सर्वोत्तम हित को ध्यान में रखते हैं, लेकिन कभी-कभी आपका बच्चा आपके द्वारा निर्धारित नियमों से असहमत हो सकता है। इसीलिए, मेरा मानना है कि पालन-पोषण की आदर्श शैली लोकतांत्रिक है। आप अपने बच्चे के साथ समझौता कर सकते हैं, लेकिन फिर भी कुछ बुनियादी नियम हैं जिनका आप उनसे पालन कराना चाहते हैं, बिना उन्हें यह महसूस कराए कि उन्हें निशाना बनाया जा रहा है या आप उनके साथ अन्याय कर रहे हैं। जब मैं पिता बन जाता हूँ, तो मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि मेरे बच्चों के पास दिशानिर्देश हों। मैं चाहता हूँ कि वे गलतियाँ करें और उनसे सीखें।

अच्छे पालन-पोषण को अक्सर जीवन के सबसे चुनौतीपूर्ण लेकिन पुरस्कृत अनुभवों में से एक के रूप में वर्णित किया जाता है। इसमें बच्चों को समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए सक्षम पूर्ण व्यक्ति बनने के लिए पोषण, मार्गदर्शन और शिक्षा देना शामिल है। इस लेख के माध्यम से अच्छे पालन-पोषण के विभिन्न पहलुओं, इसके

महत्व, एक अच्छे माता-पिता के गुण, प्रभावी पालन-पोषण की रणनीतियों और बच्चों और समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव को उजागर किया जाना है।

पेरेंटिंग बच्चे के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है जिससे उनका भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक विकास प्रभावित होता है। अच्छा पालन-पोषण बच्चों में सुरक्षा, प्यार और आत्मविश्वास की भावना को जगाता है। यह उनके भविष्य के रिश्तों, शैक्षणिक सफलता और समग्र कल्याण की नींव रखता है। जो बच्चे सकारात्मक पालन-पोषण का अनुभव करते हैं, उनके जिम्मेदार, सहानुभूतिशील और सफल वयस्क बनने की संभावना अधिक होती है।

### अच्छे माता-पिता के गुण -

**1. प्यार और स्नेह:** अच्छे पालन-पोषण के मूल में बिना शर्त प्यार और स्नेह है। बच्चों को प्यार और महत्व महसूस करने की जरूरत है। यह भावनात्मक समर्थन आत्म-सम्मान और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है।

**2. संगति और संरचना:** अच्छे माता-पिता सुसंगत नियम और संरचना प्रदान करते हैं। यह स्थिरता बच्चों को सीमाओं को समझने और आत्म-अनुशासन विकसित करने में मदद करती है। यह एक स्थिर वातावरण भी बनाती है जहाँ बच्चे सुरक्षित महसूस करते हैं।

**3. धैर्य और समझ:** पालन-पोषण के लिए अत्यधिक धैर्य और समझ की आवश्यकता होती है। बच्चे गलतियाँ करते हैं और अपनी गलतियों से सीखते हैं। अच्छे माता-पिता धैर्यवान होते हैं जो कठोर आलोचना के बजाय मार्गदर्शन और समर्थन देते हैं।

**4. संचार:** खुला और ईमानदार संचार महत्वपूर्ण है। अच्छे माता-पिता अपने बच्चों की बात सुनते हैं और उन्हें अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इससे विश्वास बढ़ता है और माता-पिता का बच्चों से रिश्ता मजबूत होता है।

**5. भूमिका:** बच्चे अपने माता-पिता को देखकर सीखते हैं। अच्छे माता-पिता सकारात्मक व्यवहार करते हैं, सम्मान, अनुकंपा और जिम्मेदारी जैसे गुणों का प्रदर्शन करते हैं। वे बच्चों के अनुकरण के लिए योग्य एक सशक्त उदाहरण स्वयं प्रस्तुत करते हैं।

**प्रभावी पालन-पोषण के लिए रणनीतियाँ -**

**1. सकारात्मक सुदृढीकरण:** अच्छे व्यवहार को स्वीकार करें और पुरस्कृत करें। सकारात्मक सुदृढीकरण बच्चों को अच्छा व्यवहार जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करता है और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

**2. सीमाएँ निर्धारित करना:** स्पष्ट और उचित नियम स्थापित करें। सीमाएँ बच्चों को अपेक्षाओं और उनके कार्यों के परिणामों को समझने में मदद करती हैं।

**3. सक्रिय भागीदारी:** अपने बच्चे के जीवन में सक्रिय रूप से शामिल हों। स्कूल के कार्यक्रमों में भाग लें, उनकी रुचियों में शामिल हों और साथ ही उनके साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताएँ। यह भागीदारी को दर्शाती है कि आप उन्हें महत्व देते हैं और उनका समर्थन करते हैं।

**4. स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करना:** बच्चों को उनकी उम्र के अनुरूप निर्णय लेने की अनुमति दें। यह स्वतंत्रता और आलोचनात्मक सोच और कौशल को बढ़ावा देती है। उन्हें अपनी गलतियों से सीखने के लिए उनका समर्थन करें।

**5. शिक्षा को बढ़ावा देना:** सीखने के प्रति प्रेम को प्रोत्साहित करें। उनके शैक्षणिक प्रयासों का समर्थन करें, संसाधन उपलब्ध कराएँ और पढ़ाई के लिए अनुकूल माहौल बनाएँ।

**6. भावनात्मक समर्थन:** भावनात्मक समर्थन का स्रोत बनें। बच्चों को उनकी भावनाओं को समझने में मदद करें और उन्हें तनाव और चुनौतियों से निपटने के स्वस्थ तरीके सिखाएँ।

**अच्छे पालन-पोषण का दीर्घकालिक प्रभाव**  
अच्छे पालन-पोषण का बच्चों पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ता है। यह उनके चरित्र, मूल्यों और जीवन विकल्पों को आकार देता है। अच्छे माता-पिता द्वारा पाले गए बच्चों में

निम्नलिखित प्रदर्शित होने की संभावना अधिक होती है :

**भावनात्मक स्थिरता:** वे आत्म-मूल्य और लचीलेपन के मजबूत बोध के साथ भावनात्मक रूप से संतुलित होते हैं।

**स्वस्थ रिश्ते:** वे स्वस्थ, सम्मानजनक रिश्ते बनाने में सक्षम होते हैं। वे संचार, सहानुभूति और आपसी सम्मान के महत्व को समझते हैं।

**शैक्षणिक और कैरियर में सफलता:** सहायक पालन-पोषण सीखने और दृढ़ता के प्रति प्रेम को बढ़ावा देता है। ये लक्षण शैक्षणिक उपलब्धि और कैरियर की सफलता में योगदान करते हैं।

**सामाजिक उत्तरदायित्व:** अच्छा पालन-पोषण सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना पैदा करता है। ये व्यक्ति अक्सर अपने समुदायों में योगदान देने के लिए अधिक सहानुभूतिशील और सक्रिय होते हैं।

**सकारात्मक पालन-पोषण प्रथाएँ:** वे अपने बच्चों के साथ सकारात्मक पालन-पोषण पद्धतियाँ अपनाने की अधिक संभावना रखते हैं, जिससे अच्छे पालन-पोषण का एक चक्र बनता है जिससे आने वाली पीढ़ियों को लाभ होता है।

### निष्कर्ष-

अच्छा पालन-पोषण प्यार, धैर्य, निरंतरता और सक्रिय भागीदारी का मिश्रण है। इसमें बच्चों के पालन-पोषण और मार्गदर्शन के लिए गहरी प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है, जिससे उन्हें एक पूर्ण, जिम्मेदार और सफल वयस्क बनने में मदद मिलती है। अच्छे पालन-पोषण का प्रभाव परिवार से परे जाकर एक स्वस्थ, अधिक दयालु समाज में योगदान देता है। चूँकि हम अच्छे माता-पिता बनने का प्रयास करते हैं, हम न केवल अपने बच्चों के भविष्य में बल्कि अपने समुदायों और समग्र विश्व के भविष्य में भी निवेश करते हैं।



## स्त्रियों की सुरक्षा

**नारी** को माँ, बहन और देवी कहा जाता है, परंतु उसका कोई मूल्य नहीं बताया जाता। हालांकि समय के साथ कई बदलाव हुए हैं, लेकिन महिलाओं की सुरक्षा पहले से भी बदतर है। हालांकि महिला - सशक्तिकरण और लैंगिक समानता जैसे शब्द कई क्षेत्रों में उपयोग किए जाते हैं, लेकिन वे प्रभावी नहीं लगते हैं।

*"नरक खाली है और सभी शैतान यहां हैं।"* महिलाओं के प्रति बलात्कार और यौन उत्पीड़न की इतनी चिंताजनक घटनाओं के बाद प्रसिद्ध लेखक विलियम शेक्सपियर का यह उदाहरण वर्तमान में बहुत अधिक प्रासंगिक महसूस होता है।

9 अगस्त को कोलकाता में एक 31 साल की पोस्ट-ग्रेजुएट डॉक्टर के साथ कुछ लोगों ने बलात्कार किया और उसकी हत्या कर दी। वह लड़की आरजी कर मेडिकल कॉलेज के अध्ययन कक्ष में गई थी, लेकिन उसकी हत्या कर दी गई। 'निर्भया' मामले की भयानक घटना को 12 साल हो गए हैं। 2012 में देर रात, एक बस में पुरुषों के एक समूह द्वारा एक लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया था। भारत में एक लड़की होने के नाते, मैं यह सोचकर बहुत निराश और शर्मिदा हूँ कि इस घटना के 12 साल बाद भी महिलाओं की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है।

यह 6 साल पहले की बात है, जब 'कठुआ' बलात्कार मामला हुआ था, जिसमें जम्मू और कश्मीर में, कठुआ के पास, एक 8 साल की बच्ची का सामूहिक बलात्कार किया गया था और उसकी हत्या कर दी गई थी।



सुश्री भद्रा आर,

सुपुत्री सी राजेन्द्रन, बरि.लेप.अधिकारी

अगला शिकार कौन होगा ? भारत वास्तव में तभी स्वतंत्र हो सकता है जब उसके सभी लोग अपनी सड़कों पर चलने के लिए स्वतंत्र और सुरक्षित हैं। यह इस पर निर्भर नहीं करता कि लड़की या पीड़िता क्या पहनती है, बल्कि उन क्रूर पुरुषों की मानसिकता पर निर्भर करता है। उसका बलात्कार उसकी उम्र पर निर्भर नहीं करता। 2 महीने की बच्ची से लेकर 70 साल की बुजुर्ग महिला तक, किसी भी उम्र की लड़की का बलात्कार किया जा रहा है।

उसका बलात्कार इसलिए हुआ क्योंकि वह रात में घूम रही थी। कई लड़कियों के वह साथ दिन के उजाले में भी बलात्कार किया जा रहा है। अगर पुरुष रात के वक्त में सड़कों पर घूम सकता है, तो एक महिला वही सुरक्षा क्यों महसूस नहीं कर सकती ?

न्याय में देरी न्याय न मिलने के समान है। प्रत्येक बलात्कार पीड़िता को यथाशीघ्र न्याय पाने का हक है। केवल लड़कियों को रात में घर के अंदर रहना सिखाने की बजाय, वे लड़कों को लड़कियों से सहजता से बर्ताव करने और उनके साथ शालीनता से व्यवहार करने की शिक्षा क्यों नहीं दे सकते ? तो आइए भारत को महिलाओं के लिए एक बेहतर स्थान बनाने के लिए हम मिलकर काम करें।

## वायनाड में भूस्खलन आपदा



श्रीमती नीनू एम डी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

**वा**यनाड, जो कि केरल राज्य का एक प्रमुख जिला है, अपनी सुंदरता और प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है। यहां की हरी-भरी पहाड़ियाँ, घने जंगल और ठंडी जलवायु इसे एक आदर्श पर्यटन स्थल बनाते हैं। लेकिन इसके साथ ही, वायनाड को कई प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं का भी सामना करना पड़ता है, जो इस क्षेत्र की शांति और स्थिरता को प्रभावित करती हैं।

30 जुलाई 2024 को, वायनाड जिले में एक भीषण भूस्खलन हुआ, जिसने क्षेत्र के निवासियों के जीवन को भारी नुकसान पहुँचाया। अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध वायनाड अब एक खौफनाक बंजर भूमि बन गया है।

भूस्खलन की श्रृंखला उस दिन के शुरुआती घंटों में हुई, जब लगातार भारी बारिश के कारण मिट्टी और पत्थर की परतें ढह गईं। इस प्राकृतिक आपदा के कारण कई परिवार बेघर हो गए, सड़कें अवरुद्ध हो गईं तथा सैकड़ों लोगों की जान चली गई। बचाव दल और स्थानीय प्रशासन ने तुरंत राहत और बचाव कार्य शुरू किया, लेकिन खराब मौसम और भूस्खलन के कारण मुश्किलें बढ़ गईं। सरकारी एजेंसियों और स्वयंसेवी संगठनों ने राहत कार्य में तेजी लाते हुए



प्रभावित क्षेत्रों में खाद्य सामग्री, दवाइयां और आश्रय उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया। स्थानीय लोगों ने भी सहयोग प्रदान किया और पुनर्वास कार्यों में योगदान दिया।

भूस्खलन (Landslide) एक भू-वैज्ञानिक घटना है जिसमें शैल, मृदा और मलबे के एक भाग का नीचे की ओर खिसकना या संचलन शामिल होता है। पहाड़ी इलाका होने के कारण वायनाड

में भूस्खलन एक गंभीर समस्या है। मानसून के मौसम में भारी बारिश से पहाड़ियों की मिट्टी ढीली हो जाती है, जिससे भूस्खलन की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

जलवायु परिवर्तन अप्रत्याशित मौसम को बढ़ावा दे सकता है। इसके चलते ऐसी बड़ी प्राकृतिक आपदाएं आ सकती हैं, जो स्थानीय लोगों को आतंक में डाल सकती हैं। 30 जुलाई को हुआ

विनाशकारी भूस्खलन जरूरी नहीं कि इसी किस्म की आपदा की श्रेणी में हो। केरल के कुछ हिस्से दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान भारी बारिश की मार झेलते हैं और भूस्खलन यहां सालाना होने वाला घटना बन गई है। लेकिन ऐसी घातक भूस्खलन की घटनाएं पहले कभी नहीं हुई थीं। इस बार प्रकोपित प्रकृति ने कुछ गांवों को जमींदोज कर दिया है। घरों के साथ-साथ अंदर मौजूद परिवार भी जलकर राख हो गए। गांव के कई हिस्सों में भारी बारिश के कारण हुए भूस्खलन में अनुमानतः 392 लोग मारे गए तथा 150 से अधिक लोग लापता बताए गए। साथ ही, कम से कम 273 लोग घायल हो गए थे। ये केवल अनुमानित आंकड़े हैं। घटना के एक महीने बाद



भी, अगर शव नहीं तो शव के अंग वहां बहने वाली नदियों में मिल रहे हैं। अब विज्ञान ही एकमात्र तरीका है यह जानने का कि वे कौन हैं, किस परिवार से हैं।

यह इलाका एक पर्यटन स्थल है और राजस्व की संभावनाओं को अधिकतम करने के लिए यहां बुनियादी ढांचे के विकास को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यहां चलियार नदी लगभग दो किलोमीटर की ऊंचाई से निकलती है और वेल्लारमाला की ओर एक सीधे रास्ते में बहती है, जिससे तेज रफ्तार से पानी आता है जो अपेक्षाकृत ज्यादा

भूस्खलन की आशंका वाले इडुक्की, कोट्टायम, मलप्पुरम और वायनाड इलाके की भौगोलिक विशिष्टताएं सालों से स्पष्ट हैं। ये इलाके भूस्खलन के जोखिम से संबंधित मानचित्रों में भी प्रमुखता से नजर आते हैं। इसलिए भूस्खलन की घातक पुनरावृत्ति के लिए जलवायु परिवर्तन और असावधान समाज को दोषी ठहराया जाना चाहिए, जिसे बार-बार चेतावनी दी गई है। बारम्बार सामने आने वाली एक समस्या अग्रिम चेतावनी और आपातकालीन तैयारियों की घोर कमी का नतीजा है।

पारिस्थितिकी (इकोलॉजी) के लिहाज से



मात्रा में तलछट को नीचे की ओर ले जाता है। बारिश ने इस नदी में पानी की मात्रा एवं उसके वेग को और बढ़ा दिया, जिससे मलबा बहकर अपेक्षाकृत कम खड़ी ढलान वाली जमीन पर बसे उन गांवों में जमा हो गया, जहां से कई लोगों की मौत की सूचना मिली है। लेकिन यह त्रासदी इस तथ्य से और भी जटिल हो गई है कि 2020 में यहां भारी बारिश की वजह से चलियार ने अपने ऊपरी इलाकों के पौधों के आवरण को नष्ट कर दिया, जिससे ज्यादा मात्रा में चट्टानें और खाद-मिट्टी (ह्यूमस) विनाश की चपेट में आ गए।

नाजुक क्षेत्रों में भूस्खलन साधारण है। मानसून के दौरान कम समय में तेज़ बारिश हो रही है जिसके परिणामस्वरूप कुछ किस्म की मिट्टी को उत्खनन के दौरान उखाड़ना आसान हो गया है। इन वजहों से, भूमि के इस्तेमाल के पैटर्न में बदलाव नहीं होना चाहिए और राज्य को बर्बाद हो चुकी वनस्पतियों को बहाल करना चाहिए तथा इन इलाकों के लोगों का पुनर्वास करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि जल्द से जल्द उनके कल्याण के अन्य अवसर उपलब्ध हो जाए और यहां के जीवन सामान्य हो जाए।

## कन्याकुमारी यात्रा:

### एक अद्वितीय अनुभव



सुश्री रेखा बी. जोसफ,

सुपुत्री श्रीमती लैना लेंथियस, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जब भी यात्रा की बात आती है, तो कन्याकुमारी की तस्वीर हमारे सामने आती है, जहाँ तीन समुद्रों का संगम होता है और भारतीय संस्कृति की गहराइयों का अनुभव किया जा सकता है। दक्षिण भारत के सबसे दक्षिणी छोर पर स्थित कन्याकुमारी, भारतीय उपमहाद्वीप का एक ऐसा स्थल है, जो अपनी भव्यता, धार्मिक महत्व और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। मेरी हाल की यात्रा ने इस स्थल की अद्वितीयता और आकर्षण को पूरी तरह से महसूस करने का मौका दिया। इस यात्रा के दौरान मेरे द्वारा अनुभव किए गए कुछ अनमोल क्षणों को साझा करना चाहती हूँ।

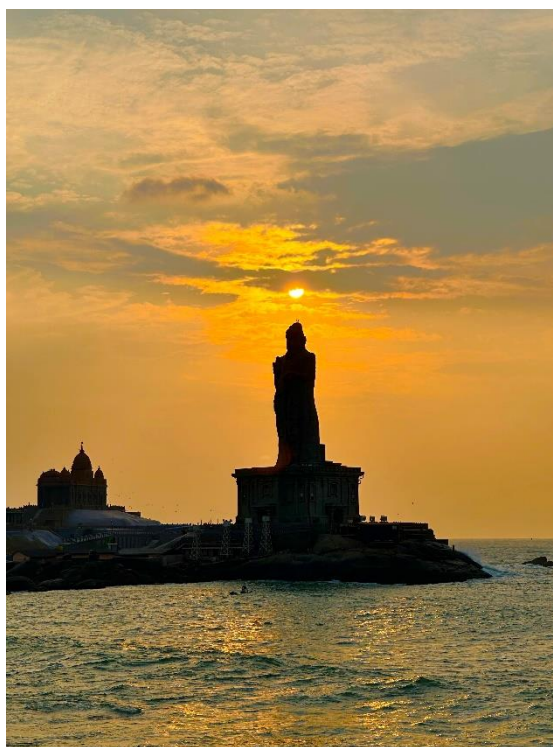
#### यात्रा की शुरुआत

हमारी यात्रा सुबह जल्दी शुरू हुई। कोल्लम से कन्याकुमारी की दूरी लगभग 160 किलोमीटर है, और यात्रा के लिए हमने

ट्रेन का विकल्प चुना। ताजगी से भरी सुबह की हवा और हरे-भरे परिदृश्य के बीच यात्रा ने हमें एक नई ऊर्जा प्रदान की। जैसे-जैसे हम कन्याकुमारी के करीब पहुँचे, समुद्र की लहरों की आवाज़ सुनाई देने लगी और मन में उत्सुकता जागृत होने लगी।

#### थिरुवल्लुवर मूर्ति की भव्यता

कन्याकुमारी पहुँचते ही, हमारी पहली मंजिल थी थिरुवल्लुवर की मूर्ति। यह विशाल प्रतिमा महान तमिल कवि थिरुवल्लुवर की है, जो समुद्र के बीच एक द्वीप पर स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए एक छोटी सी नाव यात्रा करनी पड़ती है। चारों ओर समंदर से घिरी मूर्ति की भव्यता एक दिव्य अनुभव रहा। प्रतिमा के पास जाकर मैंने महसूस किया कि कैसे एक व्यक्ति का आदर्श और उनके द्वारा



किए गए महान कार्य से कैसे पीढ़ी दर पीढ़ी प्रभावित हो सकता है।

### विवेकानंद स्मारक शिला का आध्यात्मिक अनुभव

थिरुवल्लुवर मूर्ति के बाद, हम विवेकानंद स्मारक शिला की ओर बढ़े। यह एक छोटा चट्टानी टापु है। कहा जाता है सन् 1892 में स्वामी विवेकानंद ने यहां तीन दिन और तीन रातें ध्यान में डूबे रहे जिसके परिणामस्वरूप उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। इस स्थान के आध्यात्मिक ऊर्जा और समुद्र से घिरे मनोरम दृश्य ने आत्मा को शांति प्रदान की। विवेकानंद की जीवन-गाथा और उनके विचारों के बारे में जानना, एक प्रेरणादायक अनुभव रहा।

### स्थानीय भोजन और बाजार की सैर

हमने कन्याकुमारी के स्थानीय रेस्टोरेंट में भोजन का आनंद लिया। यहाँ पर हमें ताजे और स्वादिष्ट दक्षिण भारतीय व्यंजन मिले, जैसे इडली, डोसा और सांभर। भोजन के बाद, हम कन्याकुमारी के स्थानीय बाजार की ओर बढ़े। बाजार की चहल-पहल और वहाँ के हस्तशिल्प, आभूषण और वस्त्रों ने हमें स्थानीय संस्कृति का अनुभव कराया। यहाँ से हमने कुछ स्मृति चिह्न भी खरीदे।

### कन्याकुमारी देवी मंदिर की धार्मिक यात्रा

दोपहर के बाद, हम कन्याकुमारी देवी मंदिर पहुँचे। यह मंदिर देवी कन्याकुमारी को समर्पित है और इसकी भव्य वास्तुकला तथा आध्यात्मिक वातावरण ने हमें पूरी तरह से प्रभावित किया। मंदिर की रंग-बिरंगी दीवारें और कलात्मक नक्काशी, इस स्थल की धार्मिक महत्ता को दर्शाती हैं। माता कन्याकुमारी के दर्शन ने हमारे मन को शांति और संतोष प्रदान किया।

### समुद्र तट पर सूर्यास्त

सांझ ढलते ही, हम समुद्र तट पर पहुँचे। सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए यह स्थल सबसे उपयुक्त था। समुद्र के साथ सूर्य के अस्त होने का दृश्य, रंग-बिरंगी आभा और शांत वातावरण में बिताए गए पल, बहुत ही सुंदर थे। इस मनमोहक नजारे ने हमारी यात्रा को और भी सार्थक कर दिया।



### प्रकृति का अद्भुत संगम

सूर्यास्त देखने के बाद सूर्योदय देखना तो बनता है। सुबह-सुबह हम त्रिवेणी संगम के लिए रवाना हुए, जहाँ बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और हिंद महासागर मिलते हैं। यहाँ पर सूरज की पहली किरणें देखने का अनुभव अविस्मरणीय है। समुद्र के शांत जल में सूर्य की किरणों का अद्भुत खेल, बहुत ही मनोरम है। इस संगम स्थल पर बैठकर समुद्र की लहरों की आवाज़ सुनते हुए, हमने प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति अपने प्रेम को और भी गहरा किया।

### वापसी की यात्रा

सूर्योदय देखने के बाद हम वापसी की तैयारी शुरू की। रास्ते में, हम अपने अनुभवों को

साझा करते हुए, कन्याकुमारी की अद्वितीयता और अनुपम सौंदर्य को मन में संजोते रहे। इस यात्रा ने

हमें न केवल प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव कराया, बल्कि भारतीय संस्कृति और इतिहास की गहराइयों से भी परिचित कराया।

कन्याकुमारी की यात्रा एक संपूर्ण और अद्वितीय अनुभव रही। थिरुवल्लुवर मूर्ति की भव्यता, विवेकानंद रॉक मेमोरियल की आध्यात्मिक ऊर्जा, त्रिवेणी संगम का अद्भुत सौंदर्य और कन्याकुमारी देवी मंदिर की धार्मिक महत्ता ने इस यात्रा को यादगार बना दिया। इस यात्रा ने हमें भारतीय संस्कृति, इतिहास और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति एक नई दृष्टि प्रदान की। यदि आप एक दिन की यात्रा के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप की विविधताओं को अनुभव करने चाहते हैं तो कन्याकुमारी आपके लिए एक आदर्श स्थल है।



**5** जून 1972 को स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर पहला सम्मेलन आयोजित किया गया था। यह सम्मेलन एक ऐतिहासिक आयोजन था जिसमें पर्यावरण क्षरण के बारे में बढ़ती चिंताओं पर चर्चा करने के लिए दुनिया भर के सरकारी



अधिकारी, वैज्ञानिक और पर्यावरण कार्यकर्ता एकत्रित हुए।

मानव पर्यावरण पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन की स्मृति में विश्व पर्यावरण दिवस पहली बार 5 जून, 1973 को मनाया गया। तब से, वैश्विक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और वैश्विक सुरक्षात्मक कार्रवाई को बढ़ावा देने के लिए यह विशेष दिवस प्रतिवर्ष उसी तिथि को मनाया जाता है।

इस वर्ष का विश्व पर्यावरण दिवस अभियान भूमि पुनर्स्थापन, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने पर केंद्रित है, जिसका नारा है "हमारी भूमि। हमारा भविष्य। हम #GenerationRestoration हैं।" 2024 के विश्व पर्यावरण दिवस वैश्विक समारोह की मेजबानी सऊदी अरब द्वारा की गई। एक ऐसे राष्ट्र के रूप में जो क्षरण, मरुस्थलीकरण और सूखे का सामना कर रहा है, सऊदी अरब साम्राज्य समाधान प्रदान करने में पूरी तरह से तत्पर है। साम्राज्य, सऊदी ग्रीन इनिशिएटिव और मध्य पूर्व

ग्रीन इनिशिएटिव के माध्यम से राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर कार्य कर रहा है। और यह वैश्विक स्तर पर कार्य कर रहा है, जैसा कि हमने देखा जब जी-20 की सऊदी अध्यक्षता के परिणामस्वरूप वैश्विक भूमि पुनरुद्धार पहल को अपनाया गया। इस प्रकार की कार्रवाई और नेतृत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम तीन सांसारिक संकटों की चिंताजनक तीव्रता का सामना कर रहे हैं: जलवायु परिवर्तन का संकट, प्रकृति और जैव विविधता की हानि का संकट तथा प्रदूषण और अपशिष्ट का संकट। यह संकट विश्व के पारिस्थितिकी तंत्रों पर हमला कर रहा है। अरबों हेक्टेयर भूमि क्षरित हो रही है, जिससे विश्व की लगभग आधी आबादी प्रभावित हो रही है तथा वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का आधा हिस्सा खतरे में पड़ रहा है। ग्रामीण समुदाय, छोटे किसान और अत्यंत गरीब लोग सबसे अधिक प्रभावित हैं।

संक्षेप में, विश्व पर्यावरण दिवस हमारे प्राकृतिक पर्यावरण के महत्व और इसे संरक्षित करने की तत्काल आवश्यकता का एक प्रभावशाली अनुस्मारक है। जागरूकता बढ़ाकर, कार्रवाई को प्रोत्साहित करके और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देकर, यह एक टिकाऊ और लचीले भविष्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसा कि हम विश्व पर्यावरण दिवस 2024 (बुधवार 2024) मना रहे हैं, यह हमारा कर्तव्य है कि हम #GenerationRestoration का हिस्सा बनें और जिम्मेदार विकल्प बनाकर अपने ग्रह को स्वस्थ बनाने का संकल्प लें!



विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार के कार्यालय,



प्रशासन द्वारा अधिकारियों/ कर्मचारियों में हरित पृथ्वी और स्वच्छ पृथ्वी की अवधारणा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पौधे सौंपे गए। गुरुवार को उप महालेखाकार ने कार्यालय के सामने बरगद के पेड़ पर एक नाम बोर्ड लगाया और वृक्षों की विविधता का पता लगाने और परिसर में पेड़ों से परिचित कराने के लिए कार्यालय परिसर में एक 'Tree walk' का आयोजन किया।

केरल ने बुधवार और गुरुवार को कार्यक्रम आयोजित कर कर्मचारियों के बीच पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। बुधवार को प्रधान महालेखाकार ने कार्यालय परिसर में पौधारोपण कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया तथा उप महालेखाकार/



# स्वतंत्रता दिवस समारोह 2024

भारत का स्वतंत्रता दिवस हर वर्ष 15 अगस्त को देश भर में हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह प्रत्येक भारतीय को एक नई शुरुआत की याद दिलाता है। इस दिन 200 वर्ष से अधिक समय तक ब्रिटिश उपनिवेशवाद के चंगुल से छूट कर एक नए युग की शुरुआत हुई थी। 15 अगस्त 1947 वह भाग्यशाली दिन



था जब भारत को ब्रिटिश उपनिवेशवाद से स्वतंत्र घोषित किया गया और नियंत्रण की बागडोर देश के नेताओं को सौंप दी गई। भारत द्वारा आजादी पाना उसका भाग्य था, क्योंकि स्वतंत्रता संघर्ष काफी लम्बे मय चला और यह एक थका देने वाला अनुभव था, जिसमें अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने जीवन कुर्बान कर दिए। नेताजी सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और कई नेताओं ने आजादी की क्रांति की आग फैलाई और अपने प्राणों की आहुति दी। सरदार पटेल, गांधी जी, नेहरू जी आदि ने सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए बिना हथियारों की लड़ाई लड़ी। कई सत्याग्रह आंदोलन और लाठियां खाने और कई बार जेल

जाने के पश्चात अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाने पर मजबूर कर दिया। अंग्रेजों के अत्याचारों/अमानवीय व्यवहारों के प्रति भारतीय जनता की एकजुटता बहुत काम आई और इस तरह 15 अगस्त 1947 का दिन हमारे लिए 'स्वर्णिम दिन' बन गया। हम, हमारा देश स्वतंत्र हो गए।

स्वाधीनता दिवस के अवसर पर लहराते हुए तिरंगे को देखना - चाहे वह लाल किले पर हो, राज्यों की राजधानियों में हो या हमारे आस-पास हो - हमारे हृदय को उत्साह से भर देता है। यह उत्सव, 140 करोड़ से अधिक देशवासियों के साथ अपने इस महान देश का हिस्सा होने की हमारी खुशी को अभिव्यक्त करता है।

जिस तरह हम अपने परिवार के साथ विभिन्न त्योहार मनाते हैं, उसी तरह हम अपने स्वतंत्रता दिवस को भी अपने उस परिवार के साथ मनाते हैं जिसके सदस्य हमारे सभी देशवासी हैं। सभी के लिए

हमारे स्वतंत्रता दिन का ऐतिहासिक महत्व है। इस दिन की याद आते ही उन शहीदों के प्रति श्रद्धा से मस्तक अपने आप ही झुक जाता है, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी और हमें स्वतंत्र भारत में सिर ऊंचा करके गर्व से जीने का जीवनदान दिया। अतः हमारा भी यह कर्तव्य है कि हम हमारी स्वतंत्रता की रक्षा करें। देश का नाम विश्व में रोशन हो, ऐसा कार्य करें। देश की गति के साधक बनें न कि बाधक बनकर भारत को पीछे की ओर धकेले।

अगस्त 15, 2024  
को हमारे देश  
का अठहत्तरवां  
स्वतंत्रता दिवस  
समारोह प्रधान  
महालेखाकार/  
महालेखाकार, केरल,  
तिरुवनंतपुरम के  
कार्यालयों द्वारा



स्वागत भाषण के साथ सार्वजनिक बैठक की शुरुआत हुई।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) द्वारा स्वतंत्रता दिवस संदेश दिया गया। उप महालेखाकार (प्रशासन/ ले व ह) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ स्वतंत्रता दिवस समारोह 2024 संपन्न हुआ।

कार्यालय परिसर में संयुक्त रूप से मनाया गया। आदरणीय महालेखाकार श्रीमती अतूर्वा सिन्हा की उपस्थिति में माननीय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्री एस सुनिल राज द्वारा सम्मान गारद के निरीक्षण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तदुपरांत उनके द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और मनोरंजन क्लब द्वारा आदर पूर्वक राष्ट्रगान प्रस्तुत किया गया। उसके बाद लेखापरीक्षा कार्यालय के उप महालेखाकार/ प्रशासन के



## ओणम..... भगवान के अपने देश का त्यौहार

ऐश्वर्य संपूर्ण, सुंदर और समृद्ध देश, जहाँ वाणी में न घेखा हो, कर्म में सच्चाई ही हो, मानव-मानव में भाईचारे का भाव हो..... एक ऐसा देश जो हर मानव का सपना हो, केरल का एक ऐसा स्वर्णिम काल भी था, जिनसे हम दादी..... परदादियों की बातों से परिचित हैं। कहा जाता है कि महाराजा बली का शासनकाल उस समय के जनता के लिए सुवर्ण-काल था फिर भी वह देवताओं तथा महामुनियों के गले नहीं उतरा। इसलिए देवसंरक्षणार्थ भगवान विष्णु ने वामन का रूप धारण किया और महाबलि को 'पाताल लोक' में भेज दिया। भगवान ने उनको ऐसा एक वर भी दिया कि हर साल श्रावण के महीने तिरुवोणम नक्षत्र के दिन राजा अपनी प्रजाओं को दर्शन देने के लिए आ सकते हैं। तब से लेकर हर साल राजा बलि का स्वागत केरलीय जनता बड़ी धूमधाम से किया करती है। तिरुवोणम नक्षत्र के दस दिन पूर्व ही देवप्रीति हेतु पूजा किया करते हैं। श्रावण का महीना सुनते ही हमारी स्मृति-पथ, आसमान में उड़ने वाले इंद्रधुनी रंगों वाली हजारों तितलियाँ, खुशबू के बादल, हवाओं का गीत, रंगबिरंगे फूलों की हँसी.... ऐसी तैसी मन को लुभाने वाली अनेक रंगीन चित्रों की झलकियों से भर जाते हैं। यह महीना केरल में वसंतऋतु का आगमन ही नहीं, नव-वर्ष का शुभारंभ भी है। केरल में अनाज लवन के उत्सव का शुभारंभ तब होता है। ऐश्वर्य समृद्धि

के इस महीने में अत्तम् नक्षत्र से लेकर तिरुवोणम तक दस दिन का उत्सव मनाया जाता है।

विश्व में ऐसा कोई भी देश नहीं है जहाँ एक उत्सव की शुरुआत शानदार फूलों की रंगोली से होती है। केरल में ओणम के पहले दिन से लेकर दस दिन तक फूलों की रंगोली बनाई जाती है। अत्तम के दिन के पहले ही लाल रंग की मिट्टी का मिश्रण करके गोलाकृति में क्रम-क्रम से दस स्तरों को बनाते हैं। मिट्टी के सूखने के पश्चात हर दिन उसके ऊपर गीला गोबर पोतकर फूलों को चिपकाते हैं। पुराने दिनों में फूलों की रंगोली आस पास के इलाकों से लाए जाने वाले परंपरागत फूलों जैसे, जप पुष्पम, चंद्रमल्लिका, गुले मखमल, चांदनी, कृष्णकेली, शंखपुष्पम, रुग्मिणी आदि., से बनाई जाती थी। आज कल इन्हीं पुष्पों का स्थान गोदा, गुलाब, चमेली, कुमुदिनी, तारकपुष्प आदि ने ले लिया है। ऐसा माना जाता है कि एक-एक स्तर प्रत्येक देवता के सान्निध्य को दिखलाता है। सबसे मध्य महाविष्णु, बाद में क्रमानुसार इन्द्रादि देवताओं का सान्निध्य मानता है। तिरुवोणम के दो दिन पहले यानि पूराडम के दिन घर के मुख्य कवाड पर गोबर पोतकर लकड़ी से बनाए हुए पीठ पर तृक्काक्करयप्पन की प्रतिष्ठा करते हैं। तृक्काक्करयप्पन, वामनन यानिकि., महाविष्णु का पाँचवां अवतार होते हैं। इसलिए, विष्णु पूजा हर दिन की जाती है। उस पवित्र स्थान पर जहाँ

भगवान महाविष्णु ने अपना पैर रखा था, एक मंदिर भी बनाया गया जिसे तृक्काक्करा वामन मूर्ति मंदिर के नाम से जाना जाता है।

त्योहार ऐसे अवसर होते हैं जहां केरल की जीवन शैली की विशिष्ट सादगी पर भव्यता छा जाती है। समारोहों में नए कपड़े और शानदार भोज अनिवार्य होते हैं। केरल के त्योहारों में इस देश की कला और संस्कृति को पारंपरिक रूप से सुरक्षित रखा गया है। त्योहार चाहे धार्मिक हो अथवा सामाजिक, पारंपरिक या आधुनिक हो उत्सव कला के बिना पूर्ण नहीं माना जाता। ओणम के अवसर पर नए कपड़े एवं ओणसद्या (महा भोज) सर्वप्रधान है और अनेक प्रकार के खेल भी खेले जाते हैं। इन में से अधिक बाहरी खेल होते हैं। पुरानी कला रूप पुलिकळि या कडुवाकळि इसकी विशेषता है। कलाकार अपने शरीर पर चमकीला पीले रंग का लेप लगाते हैं और उसके ऊपर काले रंग के बाघ का चित्र बनाते हैं और गाँव की भीड़-भाड़ से नाच गाने के साथ गुजर जाते हैं। इसके अलावा कय्यांकळि (इस में पुरुष अपनी मुट्टी से आपस में लड़ते हैं।), तलप्पन्तुकळि-गेंद से खेलनेवाला खेल और धनुर्विद्या भी होती है। एक ख्याति प्राप्त सामूहिक नृत्त रूप-तिस्वातिरकळि युवतियों द्वारा प्रस्तुत की जाती है। स्त्रियां अपनी परंपरागत वेषभूषा के साथ प्रस्तुत करने वाले कलारूप तुंबितुळल भी प्रमुख हैं।

‘ओणम’ केरल का देशीयोत्सव ही नहीं केरलीय जनता की एकता का प्रतीक भी है। यद्यपि

इस महोत्सव का मूल पौराणिक हैंदव कथाओं से है, फिर भी ओणम सभी वर्ग तथा धर्म के लोगों के लिए है। हिंदु मुसलमान और ईसाई धर्म के लोग, धनवान और पददलित, सभी समान धर्मोत्साह के साथ ओणम मनाते हैं। ईश्वर का अपना देश जहां एकता हमेशा विभिन्नता के साथ सहवर्तित था विशोतः उत्सवों के दौरान जब लोग जीवन के अपरिमित हर्षोल्लास को मनाने के लिए एक साथ मिलते थे। ओणम की यह धर्मनिरपेक्ष विशेषता ही इस देश का निरालापन है। यह निरालापन हमें



उन दिनों की समत्व सुन्दर..... ऐश्वर्य संपूर्ण बीते हुए कल की समृद्धि की यादें दिलाता है ..... गुजरे हुए कल का स्मरण सभी के मन में आने वाले कल के प्रति एक सुन्दर सा सपना सजाकर चला जाता है।

हर साल प्रधान महालेखाकार / महालेखाकार, केरल, तिरुवनंतपुरम के कार्यालयों द्वारा कार्यालय परिसर में संयुक्त रूप से बड़े धूमधाम से 'ओणम' मनाया जाता है। केरल की संस्कृति और परंपराओं से जुड़े कई कार्यक्रम भी इस दौरान आयोजित होते हैं। लेकिन इस साल वयनाडु भू-स्खलन के मद्दे नजर जैसेकि राज्य सरकार द्वारा उद्घोषणा की गयी ओणम त्योहार से जुड़े जशनों को सीमित किया गया था। इसलिए इस बार 'ओणम' के सिलसिले में केवल 'अत्तपूक्कळम' (फूलों की रंगोली) प्रतियोगिता, समूह गान प्रतियोगिता



ही आयोजित की गयी थीं। इससे समारोह की रौनक थोड़ी कम तो हो गयी लेकिन मानविकता की दृष्टि से देखा जाए तो सर्वथा उचित निर्णय था।

'अत्तपूक्कळम' का उद्घाटन आदरणीय महालेखाकार सुश्री अतूर्वा सिन्हा द्वारा की गई।



'ओणम' 2024 की झलकियों में से कुछ.....



ओणप्पाट्ट प्रतियोगिता का आयोजन



31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए, भारत के नियंत्रक - महालेखापरीक्षक की अनुपालन लेखापरीक्षा रिपोर्ट, भारत के संविधान के अनुच्छेद 151 (2) के तहत केरल के राज्यपाल को प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गयी है ताकि राज्य विधान-सभा के समक्ष प्रस्तुत की जा सके। इस रिपोर्ट में केरला सरकार के विभागों एवं स्वायत्त निकायों, जिसमें कृषि विकास एवं किसान कल्याण, मत्स्य पालन एवं बंदरगाह, खाद्य, सिविल आपूर्ति तथा उपभोक्ता कार्य, श्रम एवं कौशल, राजस्व तथा आपदा प्रबंधन तथा जल संसाधन विभाग शामिल हैं, की अनुपालन लेखापरीक्षा के प्रमुख परिणाम अंतर्विष्ट है।

इस रिपोर्ट में उल्लिखित मामले, वे हैं जो वर्ष 2021-2022 से संबंधित अभिलेखों की नमूना लेखापरीक्षा दौरान ध्यान में आए, और वे भी हैं जो पूर्व वर्षों में ध्यान में आए तो थे लेकिन पिछली रिपोर्टों में समाविष्ट नहीं किए जा सके। जहाँ वश्यक लगे, 2021-2022 के बाद की अवधि के मामले भी शामिल किए हैं। भारत के नियंत्रक -

महालेखापरीक्षक द्वारा जारी लेखापरीक्षण मानकों के अनुरूप लेखापरीक्षा आयोजित की गयी।

इस रिपोर्ट में एक विषय विनिर्दिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा रिपोर्ट सहित आंतरिक नियंत्रण की चूक, गैर/ अल्प राजस्व संग्रहण, परिसंपत्तियों का न्यून उपयोग, नियमों के कार्यान्वयन की कमियां, निष्फल व्यय आदि घटनाओं सहित सात अनुपालन लेखापरीक्षा पैराएं शामिल हैं जो ₹ 326.77 करोड़ समाविष्ट करते हैं। प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्ष नीचे दिए गए हैं :

#### विषय विनिर्दिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा

लेखापरीक्षा ने जोखिम उपादानों तथा नियमित औचित्य लेखापरीक्षा आयोजित करने के अतिरिक्त नियमितता लेखापरीक्षा आयोजित करने के सामयिक महत्व पर आधारित कुछ मुख्य अनुपालन मुद्दों की पहचान की। ऐसी लेखापरीक्षाओं के दौरान देखी गयी प्रमुख न्यूनताएं निम्न पैराग्राफ में विस्तृत की गयी हैं।

### केरल में सरकारी भूमि का आबंटन

38,863 वर्ग कि.मि. (1.18 प्रतिशत) क्षेत्र को समाविष्ट करने वाला केरल भारत के सबसे छोटे राज्यों में से एक है। स्वामित्व के आधार पर राज्य की भूमि को निजी और सरकारी भूमि में विभाजित किया है।

दि केरला गवर्नमेंट लैंड असाइनमेंट एक्ट, 1960 (केएलए एक्ट) राज्य के राजस्व भूमि के सभी समनुदेशनों पर लागू होता है। अधिनियम की धारा 7 के द्वारा निहित शक्तियों की हैसियत से केरल सरकार ने सरकारी भूमि के समनुदेशन के लिए विभिन्न नियमों की व्यवस्था की है। मलबार जिले में सरकारी भूमि के समनुदेशन के संबंध में लागू रहे ट्रावनकोर कोचिन गवर्नमेंट लैंड असाइनमेंट एक्ट, 1950 तथा सभी नियम व आदेश केएलए एक्ट के अधिनियमन (नवंबर 1960) के साथ रद्द हुए थे। इडुक्की जिले के देविकुळम तालूक में कण्णन देवन हिल्स गांव की भूमि को कण्णन देवन हिल्स (भूमि का पुनर्ग्रहण) अधिनियम, 1971 और उसके अंतर्गत बने नियमों के अधीन विनियमित किया गया। राज्य की नमूना जांच की गयी जिलाओं में किसी में भी सरकारी और समनुदेशनीय भूमि की अनुमोदित सूची तैयार नहीं की गयी थी। नगर पालिका एवं निगम क्षेत्रों के भीतर भू-समनुदेशन के लिए नियम, 1995 गृह निर्माण साइटों को छोड़कर प्रयोजनों के लिए समनुदेशनीय भू-क्षेत्र पर कोई सीमा निर्धारित नहीं की थी जिसके परिणामस्वरूप नगर पालिका एवं निगम क्षेत्रों में सरकार ने बिना कोई सीमा के भू-समनुदेशन किया। अयोग्य व्यक्तियों को जमीन आबंटित की जा रही थी। बाजार मूल्य एकत्र किए बिना विभिन्न एजेन्सियों को रजिस्ट्री पर जमीन अंतरित की गयी थी और ऐसी जमीनों का उपयोग वाणिज्यिक कार्यकलापों के लिए भी

किया जा रहा था। गैर-आबंटन योग्य भूमि के अनियमित समनुदेशन के दृष्टांत भी लेखापरीक्षा के ध्यान में आए। पट्टे किराए के नवीकरण से संबंध में निर्णय लेने में सरकार / राजस्व प्राधिकारियों के पक्ष में हुई विफलता के परिणामस्वरूप जमीन के अप्राधिकृत अधिग्रहण के साथ-साथ सरकार को राजस्व हानि हुई। यह सुनिश्चित करने के लिए कोई तंत्र (पंजीकरण विभाग के साथ समन्वय करते हुए) विद्यमान नहीं था कि सभी पट्टे पंजीकृत हो रहे थे जो निर्दिष्ट भूमि के संभावित छलपूर्ण अंतरण पर निवारक प्रभाव डाल सकता है। मौजूदा नियमों द्वारा निर्धारित आवधिकता के अनुसार ना ही भूमि के पट्टा किरायों को संशोधित किया जा रहा था न नियमित रूप से एकत्र किया जा रहा था जिससे सरकारी खजाने को नुकसान हो रहा था। सरकार ने शर्तों के उल्लंघन करने पर जमीन का पुनःग्रहण जैसा परिशोधन उपाय नहीं किया है। क्लबों व अन्य एजेन्सियों को प्रदान की गयी जमीन पर पट्टा किराया माफ करने के कारण सरकार को आर्थिक हानि हुई। उसी प्रकार आबंटित जमीन का उपयोग अन्य प्रयोजनों के लिए किया जा रहा था और नियमों के उल्लंघन में आबंटित भूमि के हस्तांतरण की घटनाएं भी थीं।

सरकारी भूमि के आबंटन से संबंधित अवैधताएं सख्ती से निपटी जानी है और उन अपराधी अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई की जानी चाहिए जिन्होंने लापरवाही या मिलीभगत से इन उल्लंघनों को बढ़ावा दिया है। तदनुसार सरकार को अनियमितताएं ठीक करने के लिए परिशोधन उपाय करना चाहिए ताकि सार्वजनिक हितों की पूर्ति हो और ऐसी चूकों के लिए संबंधित पदाधिकारियों को जिम्मेदार ठहराया जाए। अयोग्य व्यक्तियों को भू-आबंटन के मामलों में, पंजीकरण पर बाजार मूल्य के गैर-संग्रहण के मामलों में और उद्दिष्ट प्रयोजन के लिए आबंटित

भूमि का उपयोग न किए जाने के मामले में दायित्व निर्धारित होना चाहिए।

भूमि-पट्टे से संबंधित अदालती मामले बड़ी संख्या में स्थगन के अधीन थे और स्थगन की अवधि एक से 23 वर्षों की श्रेणी में है। भूमि-पट्टे से संबंधित अभिलेखों व पंजियों का अनुरक्षण त्रुटिपूर्ण था जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण सूचनाएं नष्ट हो गयीं।

### अनुपालन लेखापरीक्षा पैराग्राफ

लेखापरीक्षा के ध्यान में ऐसी घटनाएं आयी जहां प्रशासनिक निगरानी और विभिन्न स्तरों पर संगठित कार्रवाई के अभाव के कारण केरल सरकार द्वारा छलपूर्ण दावों, राजस्व के गैर/अल्प संग्रहण, अतिरिक्त भुगतान आदि के विरुद्ध धनराशि जारी की गई। ब्योरे नीचे दिए गए हैं।

### छलपूर्ण दावे / भुगतान

- प्रशिक्षण भागीदारों द्वारा प्रस्तुत प्लेसमेंट दस्तावेजों की यथार्थता सुनिश्चित करने में केरला अकादमी फोर स्किल एक्सेलेन्स के पक्ष में हुई विफलता के परिणामस्वरूप प्रशिक्षण भागीदारों को ₹ 16.72 लाख का अनुचित वित्तीय लाभ हुआ।

### अतिरिक्त भुगतान

- सप्लाईको द्वारा विलंबित भुगतान पर ब्याज परिकलित करने के लिए बैंक दर के बजाय वाणिज्यिक ब्याज दर गलत रूप से लागू करने के कारण ₹ 1.07 करोड़ का अतिरिक्त भुगतान हुआ।

### राजस्व के गैर/ अल्प संग्रहण

- बिलिंडिंग कर के लिए बाध्य इमारतों को निर्धारित करने में राजस्व विभाग के

पदाधिकारियों के पक्ष में हुई विफलता के कारण सरकार को ₹ 31.60 करोड़ की राशि के राजस्व के गैर/ अल्प उगाही हुई।

- केरल वाटर अथॉरिटी द्वारा फ्लैटों के तौर पर इमारतों के गलत वर्गीकरण के कारण ₹ 82.06 लाख के समतुल्य राशि के जल प्रभारों का अल्प संग्रहण हुआ।

### नियमितता मुद्दा

- ऋण सहायता के लिए नेशनल बैंकवार्ड क्लासेस फिनान्स एंड डिवलेपमेंट कारपोरेशन के योजना मार्गदर्शी सिद्धांतों के उल्लंघन के परिणामस्वरूप केरल सरकार द्वारा हिताधिकारियों पर ₹ 3.61 करोड़ के अतिरिक्त ब्याज का बोझ थोपा गया।

### निष्फल व्यय

प्लेन्टेशन कारपोरेशन ऑफ केरला लिमिटेड की वृक्षारोपण गतिविधियां

पीसीकेएल निरंतर रूप से उनके रबड़, काजू जैसे मुख्य बागानों जो घटते जा रहे थे, के परिचालन एवं प्रतिफल में हानि उठा रहा था। उत्पाद लागत कम करने, पेड़ों के उत्पादक जीवन बढ़ाने और टैपिंग श्रमिकों के अभाव प्रबंधन के लिए रबड़ बोर्ड द्वारा हिमायत की गयी अच्छी प्रथाओं को स्वीकृत करने में पीसीकेएल विफल हुआ। वैज्ञानिक तरीके से रबड़ पेड़ों का पुनःरोपण करने के लिए वार्षिक संगणना ब्योरे उपयोग करने के लिए पीसीकेएल के पक्ष में हुई विफलता के कारण पुराने और जीर्ण पेड़ों वाले क्षेत्र में वृद्धि हुई। रबड़ इस्टेटों में रबड़ पेड़ों की अनुशंसित सघनता अनुरक्षित करने में पीसीकेएल विफल हुआ। प्लेन्टेशन कारपोरेशन ऑफ केरला लिमिटेड द्वारा डायरी फार्म परियोजना के लिए गायों को न खरीदने के कारण ₹ 5.54 करोड़ का निष्फल व्यय हुआ।



श्री वीरेश सिंह, लेखापरीक्षक

**ई-ऑफिस** एक व्यापक डिजिटल प्लेटफार्म है जिसे कार्यालय कार्यों को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सरल और आधुनिक बनाने के लिए विकसित किया गया है। यह एक पहल है जिसे भारत सरकार के राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (NIC) द्वारा विकसित किया गया है जिसका उद्देश्य सरकारी विभागों और संगठनों के कार्यप्रवाह और कार्यालय प्रबंधन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित और आधुनिक बनाना है। इस प्लेटफार्म को पारंपरिक कागज आधारित प्रक्रियाओं को इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों से बदलने के लिए डिज़ाइन किया गया था, जिससे कागजी काम की मात्रा कम हो सके, दस्तावेज़ प्रबंधन में सुधार हो सके और सरकारी कार्यालयों के भीतर बेहतर संचार की सुविधा मिल सके। ई-ऑफिस के विकास का उद्देश्य उत्पादकता को बढ़ाना, विलंब को कम करना और डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके एक अधिक कुशल और पारदर्शी कार्य वातावरण को बढ़ावा देना था।

**ई-ऑफिस की मुख्य विशेषताएँ:**

**क. दस्तावेज़ प्रबंधन:**

- ई-ऑफिस फ़ाइलों और दस्तावेज़ों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में प्रबंधित और ट्रैक करने की प्रणाली प्रदान करता है। इसमें भौतिक फ़ाइलों को डिजिटलाइज़ करना, उनके स्थानांतरण को ट्रैक करना और उनके जीवनकाल का प्रबंधन शामिल है। यह दस्तावेज़ों को बनाने, संशोधित करने और अनुमोदन के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक कार्यप्रवाह में समर्थन करता यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी चरण एक संरचित तरीके से पूरे हों।

**ख. संचार और सहयोग:**

- ई-ऑफिस डिजिटल माध्यम से आंतरिक संचार को सुविधाजनक बनाता है, पारंपरिक कागज आधारित मेमो और संचार की जगह लेता है। इसमें साझा कार्यक्षेत्र, चर्चा मंच और वास्तविक समय की अद्यतनों जैसे सहयोगात्मक उपकरण शामिल हैं।

**ग. प्रक्रिया स्वचालन:**

- नियमित कार्यों और प्रक्रियाओं को स्वचालित किया जा सकता है, जिससे मैन्युअल हस्तक्षेप कम होता है और प्रशासनिक कार्य तेजी से होते हैं। विभिन्न प्रशासनिक कार्यों के लिए पूर्व-निर्धारित टेम्पलेट्स और फॉर्म उपलब्ध हैं, जिससे स्थिरता और त्रुटियों में कमी आती है।

**घ. ट्रेकिंग और रिपोर्टिंग:**

- सिस्टम दस्तावेजों की गतिविधियों, अनुमोदनों और संशोधनों का विस्तृत रिकॉर्ड रखता है, जो पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाता है। ई-ऑफिस दस्तावेज प्रसंस्करण समय, कार्यभार वितरण और अन्य मैट्रिक्स पर रिपोर्ट और विश्लेषण उत्पन्न करने के लिए उपकरण प्रदान करता है।

**ङ. सुरक्षा और अनुपालन:**

- इसमें संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा के लिए उपयोगकर्ता प्रमाणीकरण और भूमिका आधारित पहुँच नियंत्रण जैसे मजबूत सुरक्षा उपाय शामिल हैं। ई-ऑफिस सरकारी दस्तावेज प्रबंधन और डेटा सुरक्षा मानकों और विनियमों के साथ अनुपालन सुनिश्चित करता है।

**च. एकीकरण और स्केलेबिलिटी:**

- यह अन्य सरकारी प्रणालियों और डेटाबेस के साथ एकीकृत हो सकता है, जिससे डेटा आदान-प्रदान और प्रक्रिया एकीकरण सुगम होता है। इसे विभिन्न विभागों और

संगठनों की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्केलेबल बनाया गया है।

**चलिए** ई-फाइल के बारे में बात करते हैं।

ईऑफिस में ई-फाइल एक पारंपरिक भौतिक फाइल का डिजिटल रूप है, जिसका उपयोग सरकारी और संगठनात्मक कार्यप्रवाह में किया जाता है। यह एक ऐसी प्रणाली है जहाँ किसी विशेष मामले या विषय से संबंधित सभी दस्तावेज, पत्राचार और नोट्स को इलेक्ट्रॉनिक रूप से संग्रहित और प्रबंधित किया जाता है। कागज़ की फाइलों को मैन्युअल रूप से संभालने के बजाय, सब कुछ डिजिटल रूप से किया जाता है, जिससे उपयोगकर्ता एक केंद्रीकृत प्रणाली के माध्यम से फाइलें बना सकते हैं, संग्रहित कर सकते हैं और उन तक पहुंच सकते हैं।

ई-फाइलें, फाइल प्रबंधन की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करती हैं, जिससे दस्तावेजों को आसानी से साझा करने, संपादित करने और अनुमोदित करने में मदद मिलती है। इनमें फाइल नंबर, विषय और तारीख जैसी मेटा डेटा शामिल होती है, जिससे जानकारी को खोजने और पुनः प्राप्त करने में आसानी होती है। अनुमोदनों के लिए डिजिटल हस्ताक्षरों का उपयोग किया जाता है, जिससे दस्तावेजों की सुरक्षा और प्रामाणिकता सुनिश्चित होती है। यह प्रणाली ई-फाइल पर की गई सभी कार्रवाइयों का रिकॉर्ड रखती है, जो जवाबदेही और पारदर्शिता के लिए एक स्पष्ट रिकॉर्ड प्रदान करती है। यह डिजिटल दृष्टिकोण दक्षता बढ़ाता है, कागज़ पर निर्भरता को कम करता है और अधिकृत उपयोगकर्ताओं को कहीं से भी फाइलों तक पहुंचने की अनुमति देकर दूरस्थ कार्य का समर्थन करता है।

दी गई बिंदुएं "ई-फाइल" प्रणाली के वर्कफ्लो को समझाती है, जो संभवतः कार्यालय के डिजिटल वातावरण में आधिकारिक दस्तावेजों और पत्राचार को संभालने के लिए उपयोग की जाती है।

#### क. स्कैनिंग और संग्रहण:

- ❖ प्रक्रिया की शुरुआत पहले रिसीवर द्वारा प्राप्त रसीद या पत्र को स्कैन करने से होती है। स्कैन किया हुआ दस्तावेज स्थानीय क्लाउंट मशीन पर संग्रहित किया जाता है।

#### ख. ब्राउज़ और अपलोड करें:

- ❖ स्कैन किए गए दस्तावेज को सिस्टम में ब्राउज़ और अपलोड किया जाता है।

#### ग. मेटा डेटा दर्ज करें (डायरीकरण):

- ❖ दस्तावेज की प्रासंगिक जानकारी (जैसे तारीख, भेजने वाला, विषय आदि) को सिस्टम में दर्ज किया जाता है। इस प्रक्रिया को डायरीकरण कहा जाता है।

#### घ. अनुक्रमिक डायरी नंबर निर्माण:

- ❖ ई-रसीद के लिए सिस्टम एक अनुक्रमिक डायरी नंबर उत्पन्न करता है, जो दस्तावेज के लिए एक अद्वितीय पहचानकर्ता के रूप में कार्य करता है।

#### ङ. ई-रसीद भेजना:

- ❖ ई-रसीद को संबंधित उपयोगकर्ता को भेजा जाता है या आगे की प्रक्रिया के लिए उपयुक्त ई-फाइल में रखा जाता है।

#### च. ई-फाइल बनाना या मौजूदा ई-फाइल में जोड़ना:

- ❖ यदि दस्तावेज की आवश्यकता होती है तो एक नई ई-फाइल बनाई जाती है, या दस्तावेज को मौजूदा ई-फाइल में जोड़ा जाता है।

#### छ. मेटा डेटा दर्ज करें:

- ❖ ई-फाइल के लिए मेटा डेटा सिस्टम में दर्ज किया जाता है ताकि सभी प्रासंगिक जानकारी को कैप्चर किया जा सके।

#### ज. ई-फाइल नंबर निर्माण:

- ❖ ट्रैकिंग और संदर्भ के लिए सिस्टम एक अद्वितीय ई-फाइल नंबर उत्पन्न करता है।

#### झ. ई-फाइल की प्रक्रिया:

- ❖ ई-फाइल खोली जाती है और उपयोगकर्ता नोटिंग शुरू कर सकते हैं, ड्राफ्ट बना सकते हैं, ड्राफ्ट संपादित कर सकते हैं, ड्राफ्ट को मंजूरी दे सकते हैं, ड्राफ्ट जारी कर सकते हैं और ई-फाइल के भीतर नोटिंग, ड्राफ्ट और पत्राचार का संदर्भ दे सकते हैं।

#### ञ. डिजिटल हस्ताक्षर:

- ❖ आवश्यक कार्रवाइयों के बाद, ई-फाइल को डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित (डीएससी/ ई-साइन का उपयोग करके) और वर्कफ्लो में अगले उपयोगकर्ता को भेजा जाता है।

#### ट. प्रस्तुति चैनल:

- ❖ ई-फाइल प्रणाली में उपयुक्त चैनलों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है।

**ठ.निर्णय और प्रेषण:**

- ❖ निर्णय ई-फाइल में दर्ज किए जाते हैं और स्वीकृत ड्राफ्ट या पत्र को डाक या ईमेल द्वारा प्रेषित किया जाता है।

यह वर्कफ्लो यह सुनिश्चित करता है कि सभी दस्तावेजों को व्यवस्थित रूप से संभाला जाए जिसमें कार्रवाइयों, अनुमोदनों और निर्णयों का स्पष्ट रिकॉर्ड हो।

ई-ऑफिस सिस्टम का उपयोग करने के कई लाभ होते हैं, विशेष रूप से एक डिजिटल या आधुनिक कार्यालय वातावरण में:

**क.बढ़ी हुई दक्षता:** प्रक्रियाओं को स्वचालित और डिजिटाइज़ करके, e-Office कागजी कार्रवाई और मैनुअल हैंडलिंग को कम करता है जिससे प्रसंस्करण समय तेजी से होता है।

**ख.बढ़ी हुई पारदर्शिता:** इलेक्ट्रॉनिक ट्रैकिंग और ऑडिट ट्रेल्स दस्तावेज़ प्रबंधन और अनुमोदनों में पारदर्शिता को बढ़ाते हैं।

**ग.बेहतर जवाबदेही:** विस्तृत रिकॉर्ड और डिजिटल सिग्नेचर दस्तावेज़ों पर किए गए कार्यों की जवाबदेही बनाए रखने में मदद करते हैं।

**घ.बेहतर सहयोग:** डिजिटल उपकरण टीम के सदस्यों और विभागों के बीच बेहतर संचार और सहयोग को सक्षम बनाते हैं।

**कार्यान्वयन और उपयोग:**

**क.प्रशिक्षण और समर्थन:** NIC सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को e-Office

प्रणाली को अपनाने और प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण और समर्थन प्रदान करता है।

**ख.अनुकूलन:** सिस्टम को विभिन्न विभागों और सरकारी निकायों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है।

ई-ऑफिस भारतीय सरकार में प्रशासनिक प्रक्रियाओं को आधुनिक बनाने, दक्षता बढ़ाने और सेवा वितरण और शासन में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

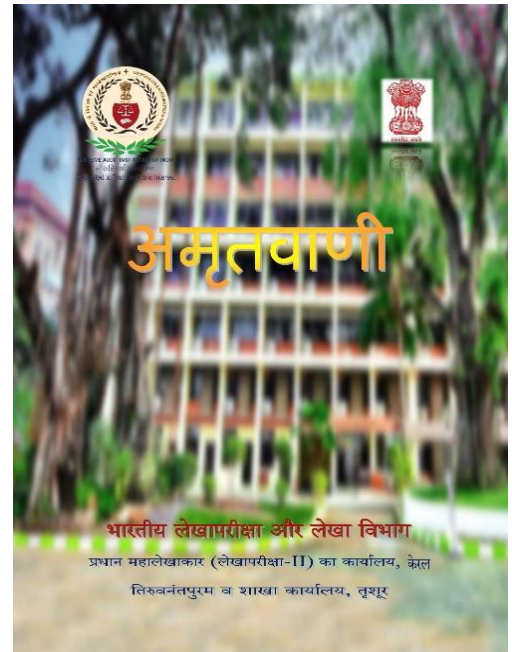
भारतीय सरकारी विभागों में ई-ऑफिस का उपयोग करने का निष्कर्ष यह है कि यह सरकारी कार्यालयों के कामकाज में दक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही को काफी हद तक बढ़ाता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित होकर, विभाग अपने कार्यप्रवाह को सुव्यवस्थित कर सकते हैं, कागज़ पर निर्भरता कम कर सकते हैं और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की गति में सुधार कर सकते हैं। यह प्रणाली दस्तावेज़ों तक आसान पहुंच, बेहतर रिकॉर्ड-रखरखाव और फ़ाइलों पर की गई सभी कार्रवाइयों का स्पष्ट ऑडिट ट्रेल सुनिश्चित करती है।

कुल मिलाकर, ईऑफिस को अपनाने से देरी को कम करने, त्रुटियों को न्यूनतम करने और सरकारी कार्यों को अधिक पर्यावरण के अनुकूल बनाने में मदद मिलती है, क्योंकि यह कागज़ की खपत को कम करता है। यह डिजिटल बदलाव अधिक पारदर्शी और कुशल सरकार के व्यापक लक्ष्य का समर्थन करता है जो डिजिटल इंडिया की दृष्टि के साथ मेल खाता है।

## हिंदी ई-गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के प्रथम अंक का प्रकाशन

प्रधान महालेखाकार ने अप्रैल 2024 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में संयुक्त अर्धवार्षिक हिंदी ई-गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के प्रथम अंक का लोकार्पण किया। समिति के समक्ष पत्रिका का ई-रूपांतरण प्रस्तुत किया गया।

<https://cag.gov.in/uploads/media/AMRITVANI-samagri-Final-Version-GCKP-066309a67829320-56826154.pdf>





## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति : राजभाषा वैजयंति एवं प्रमाणपत्र

नराकास की वर्ष 2024-25 की पहली अर्ध वार्षिक बैठक में राजभाषा पुरस्कार योजना वर्ष 2021-22 तथा वर्ष 2022-23 के तहत विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। हमारे कार्यालय को राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए वर्ष 2021-22 में तृतीय स्थान हेतु राजभाषा वैजयंति और वर्ष 2022-23 के तहत पांचवे स्थान हेतु प्रमाणपत्र प्राप्त हुए।



नराकास अध्यक्ष माननीय श्री एस सुनिल राज, प्रधान महालेखाकार से प्रधान महालेखाकार (लेप. II) के कार्यालय के लिए प्रमाण-पत्र एवं रा.भा.वैजयंति ग्रहण करते हुए सुश्री यशोदा, वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन)

राजभाषा उत्सव 2021-22 के अंतर्गत आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में विजेता बने पदाधिकारियों को भी उक्त बैठक में पुरस्कार वितरित किए गए।



नराकास, प्रमुख माननीय श्री मोहम्मद डानिश से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्रीमती उषा बर्ती, व.लेप.आ, श्री बाटन जोर्ज, स.लेप.अ, सुश्री भावना सोनी, स.लेप.अ., श्री राजीव वी आर, व.लेप.



नराकास, प्रमुख माननीय श्री मोहम्मद डानिश से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री विजय कुमार, स.लेप.अ.



नराकास, प्रमुख माननीय श्री मोहम्मद डानिश से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री राजीव वी आर, व.लेप.



नराकास, प्रमुख माननीय श्री मोहम्मद डानिश से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री विजय कुमार, स.लेप.अ.

# आपके पत्र

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के ई-संस्करण के प्रथम अंक की प्रति प्राप्ति हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका 'अमृतवाणी' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

\*\*\*\*\*

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, फलदायक धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं उच्च कोटि की हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे महत्वपूर्ण विषयों को समाहित करना अतुलनीय है। पत्रिका की समस्त रचनाएँ एक से बढ़कर एक है विशेष रूप से "नया साल, एकता में ही बल है, मन के हारे हार है, मन के जीते जीत, महिलाओं को आर्थिक आजादी की जरूरत" आदि रचनाएँ रोचक, सारगर्भित, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओडिशा, भुवनेश्वर-751001

\*\*\*\*\*

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 01.05.2024 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्रीमती यशोदा का लेख "मंदिरों का शहर----- खंडहरो का भी", सुश्री उष्णिमाया सी जे का लेख "मैं कल कसंगी", श्री योगेन्द्र सिंह का लेख "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है। इसके अतिरिक्त श्री वी.आर. राजीव की कविता "एक दोस्त", सुश्री वक्की मेरी जिजो की कविता "हिंदी मेरा अभिमान" एवं श्री गोपेश कुमार की कविता "एक दौर बचपन का," पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय) जीजीएससीआर भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली

\*\*\*\*\*

# आपके पत्र

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक का आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक हैं। निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं -

| सं | रचनाकार                       | रचनाएँ                           |
|----|-------------------------------|----------------------------------|
| 1. | श्रीमती यशोदा                 | मंदिरों का शहर. खंडहरों का भी    |
| 2. | श्री के अनिल                  | ये जरूरी तो नहीं                 |
| 3. | श्री गोपेश कुमार              | एक दौर बचपन का                   |
| 4. | सुश्री जे आर मालविका अनुमति - | एक महिला के जीवन से अंत तक       |
| 5. | श्री योगेन्द्र सिंह           | मन के हारे हार है मन के जीते जीत |

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,  
हस्ता/-  
हिंदी अधिकारी  
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय  
(केन्द्रीय), मुंबई

\*\*\*\*\*

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण व पृष्ठ सज्जा अत्यंत आकर्षक व सुंदर है। एकता में ही बल है, मैं कल करूंगी, एक दोस्त, ये जरूरी तो नहीं, सफर, वृद्धाश्रम, मन के हारे हार है मन के जीते जीत विशेष रूप से उल्लेखनीय व आत्मीय रचनाएँ हैं। पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय व ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,  
हस्ता/-  
हिंदी अधिकारी  
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय  
उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाऊस, नई दिल्ली

\*\*\*\*\*

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के ई-संस्करण के प्रथम अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर

# आपके पत्र

करे यही कामना है । पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीया,

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले व हक),  
तमिलनाडु, 361, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई

\*\*\*\*\*

महोदया,

आपके कार्यालय का पत्रांक- ले.प. II/  
हिंदी कक्ष/ई-गृह पत्रिका-अमृतवाणी/2024-25,  
दिनांक 01.05.2024 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "अमृतवाणी" की प्राप्ति हुई । धन्यवाद । पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है । "अमृतवाणी" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है । आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी ।

इस "अमृतवाणी" पत्रिका के सभी लेखकों को हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएं ।

भवदीय,

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),  
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेन्ट प्लेस  
(पश्चिम), कोलकाता

\*\*\*\*\*

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं । विशेषकर निम्नलिखित रचनाएं उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्रं नाम एवं पदनाम

रचनाएं

1. श्रीमती यशोदा, व.उ.म.ले. मंदिरों का शहर...

खंडहरों का भी

2. श्री वी. बीजू श्रीधर, स.ले.प.अ. गणतंत्र दिवस

3. श्रीमती के.एन. बिन्दु, पर्यवेक्षक मैं निलूपमा हूँ

4. श्रीमती नीनु एम डी, व.ले.प वृद्धाश्रम

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है ।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीया,

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),

महाराष्ट्र, नागपूर

\*\*\*\*\*

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित कार्यालयीन अर्द्धवार्षिक पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है । साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है । कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण,

# आपके पत्र

सार्थक तथा मन को छू लेने वाले हैं । इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं वो हैं- मंदिरों का शहर..... खंडहरों का भी, हिन्दी मेरा अभिमान, सतरंगी बोली, मैं कल कसंगी, एक दोस्त, एक दौर बचपन का, बरसात की रातें, अनुमति-एक महिला के जीवन से अंत तक तथा वृद्धाश्रम आदि ।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

हस्ता/-

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/हिंदी कक्ष  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),  
पश्चिम बंगाल

\*\*\*\*\*

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" का प्रथम अंक प्राप्त हुआ, पतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका का कलेवर व स्परेखा अत्यधिक आकर्षक है । इस पत्रिकों में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

- | क्रं | रचनाकार              | रचनाएँ                            |
|------|----------------------|-----------------------------------|
| 1.   | श्री अनुराग शुक्ला   | नया साल                           |
| 2.   | श्रीमती के मन बिन्दु | मैं निलूपमा हूँ                   |
| 3.   | श्री योगेन्द्र सिंह  | मन के हारे हार है, मन के जीते जीत |
| 4.   | सुश्री जे आर मालविका | अनुमति-एक महिला के जीवन से अंत तक |

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),  
पंजाब, चंडीगढ़- 160017

\*\*\*\*\*

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम अंक की ई- पूति प्राप्त हुई है । पतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है ।

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचना "ये जरूरी तो नहीं", "मन के हारे हार है मन के जीते जीत" एवं "एकता में ही बल है" बहुत ही प्रेरक एवं रुचिकर हैं । पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनाएँ अत्यंत प्रेरक, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है । पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन  
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)  
लखनऊ

\*\*\*\*\*

# आपके पत्र

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

सर्वप्रथम राजभाषा के प्रचार प्रसार में एक और कड़ी जोड़ने के लिए बहुत बहुत साधुवाद। पत्रिका का मुखपृष्ठ, साज-सज्जा एवं कलेवर बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं उच्च स्तर की एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर 'एकता में ही बल है', 'सतरंगी बोली', 'एक दोस्त', 'अनुमति-एक महिला के जीवन से अंत तक', 'वृद्धाश्रम', 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत' एवं 'महिलाओं को आर्थिक आजादी की जरूरत' पठनीय, सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। राजभाषा हिंदी पर प्रस्तुत लेख सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित गतिविधियों के समाचार एवं चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहे हैं।

पत्रिका के बेहतरीन सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,  
हस्ता/-

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार  
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान  
संस्थान, सरोजिनी नायडू मार्ग, प्रयागराज

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गयी हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, रचनाएं एवं विचार सरल, प्रशंसनीय एवं पठनीय हैं।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,  
हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),  
2, गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स, पश्चिम  
बंगाल, कोलकाता

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय के पत्र ईमेल दिनांक 03.05.2024 को संज्ञान में लें। इस संबंध में आपके कार्यालय से हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम अंक की ई - प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। 'मंदिरों का शहर..... खंडहरो का भी', 'हिंदी मेरा अभिमान', 'मैं कल कस्की', 'मैं निलूपगा हूँ' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,  
हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन  
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय व्यय  
(पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग) मुंबई शाखा,  
नव भवन, आर के मार्ग, बल्लार्ड इस्टेट - मुंबई

# आपके पत्र

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, उत्कृष्ट एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरणपृष्ठ बेहद आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित महत् व्यक्तियों की कविताएँ एवं अनमोल विचार भी प्रेरणाप्रद हैं। रचनाएँ "फकता में ही बल है", "हिंदी मेरा अभिमान", "सतरंगी बोली", "फक दौर बचपन का", "मन के हारे हार है मन के जीते जीत" एवं "महिलाओं को आर्थिक आज़ादी की जरूरत" विशेष रूप से सराहनीय हैं। सभी रचनाकार एवं पत्रिका के सुंदर संपादन के लिए संपादक मंडल प्रशंसा के पात्र हैं। पत्रिका के निरंतर प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाएं।

भवदीया,

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी,

कार्यालय प्र.मले.(लेप.-II), तमिलनाडु & पुदुचेरी  
चेन्नई-18

\*\*\*\*\*

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम अंक (ई-प्रति) की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरणपृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी प्रकोष्ठ कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), हैदराबाद, शाखा कार्यालय, उप निदेशक/सी आर ए, ओडिशा, भुवनेश्वर

\*\*\*\*\*

महोदय/महोदया,

पत्र सं. ले.प. II/ हिंदी कक्ष/ई-गृह पत्रिका-अमृतवाणी/2024-25, दिनांक 01.05.2024 के द्वारा आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "अमृतवाणी" के प्रथम ई-संस्करण की प्रति प्राप्ति हुई है। फ़तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। पत्रिका के आवरण पृष्ठ भी अति सुंदर है। "हिंदी मेरा अभिमान", "गणतंत्र दिवस", "फक दौर बचपन का", "सफर", "मातृभूमि" एवं "वृद्धाश्रम" आदि रचनाएँ विशेष रूप से ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं रुचिकर हैं। उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी (हिंदी कक्ष),

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, प्लॉट नं.5, सेक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग,

चण्डीगढ़

\*\*\*\*\*

# आपके पत्र

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई, धन्यवाद। पत्रिका का मुख-पृष्ठ, साज-सज्जा तथा विषयों की प्रस्तुति का ढंग अत्यंत सुंदर है। प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक व उच्च कोटि की हैं। इसके अलावा पत्रिका में सम्मिलित तस्वीरें इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाती हैं। साथ ही, मौलिक सोच तथा सृजनात्मकता की सुंदर अभिव्यक्ति इसमें दृष्टिगत होती है।

राजभाषा हिंदी की प्रगति में 'अमृतवाणी' इसी तरह सतत योगदान देती रहे, इसी शुभकामना के साथ समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल को ढेर सारी बधाइयां एवं शुभकामनाएं।

धन्यवाद सहित

राजभाषा अनुभाग

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) बंगलूरु

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "अमृतवाणी" का पहला अंक प्राप्त हुआ है। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है और इसमें प्रकाशित रचनाएं भी उत्कृष्ट हैं। विशेष रूप से सुश्री मालविका की 'अनुमति - एक महिला के जीवन से अंत तक' एवं सुश्री मैथिली जे आर की 'महिलाओं को आर्थिक आजादी की जरूरत' आदि लेख बढती पीढ़ी के स्वतंत्र विचारों से हमें अवगत कराते हैं, और इसी कारण से सराहनीय है। साथ ही श्रीमती यशोदा की 'मंदिरों का शहर... खंडहरों का भी', कृष्णकला पी आर की कविता 'मातृभूमि', सुश्री उणिमया की कहानी 'मैं कल कसंगी' आदि बहुत प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका प्रकाशन की पहल करने पर आपको बहुत बहुत बधाईयां और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया,

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष  
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

शाखा कार्यालय, कोच्ची

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह-पत्रिका 'अमृतवाणी' के प्रथम ई-संस्करण के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई, इस हेतु पत्रार्थ धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर मुद्रित छाया चित्र आकर्षक एवं विषय अनुकूल है। पत्रिका के आंतरिक पृष्ठ में रंगों का समायोजन व रूपरेखा उत्तम है। आपके कार्यालय आयोजित किए अनेक कार्यक्रमों/गतिविधियों के चित्र कार्यक्रमों के व्यापक स्तर को दर्शाते हैं।

पत्रिका का साहित्यिक भाग रोचक व प्रशंसनीय है। वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन द्वारा लिखित 'मंदिरों का शहर..... खंडहरों का भी' शीर्षक लेख हमी के समृद्ध इतिहास और आकर्षण के केन्द्रों की सुंदर व्याख्या करता है। लेख 'नया साल' सच्ची मित्रता से परिपूर्ण एक प्रेरणादायक रचना है। 'मैं नीलुपमा हूँ' लेख पौराणिक कथा अत्यंत रोचक है। 'अनुमति एक महिला के जीवन से अंत तक' व 'महिलाओं को आर्थिक आजादी की जरूरत' वर्तमान समाज में महिलाओं की स्थिति और महिला शक्तिकरण को इंगित करता उत्तम लेख है। 'वृद्धाश्रम' वर्तमान भौतिकवादी परिवेश में वृद्धों की स्थिति को गंभीरता से दर्शाता एक विचारणीय

# आपके पत्र

लेख है । 'मातृभूमि' व 'एक दौर बचपन का' कविताएं अच्छी ओर दिल को छु लेने वाली है ।

पत्रिका के प्रथम प्रयास में ही उत्कृष्ट संकलन, सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई साथ ही पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित शुभकामनाएं ।

भवदीया,

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

गुजरात "लेखापरीक्षा भवन", नवरंगपुरा,

अहमदाबाद

\*\*\*\*\*

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई है । सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है ।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, रोचक एवं उच्च स्तरीय हैं । श्रीमती यशोदा द्वारा रचित 'मंदिरों का शहर.. खंडहरों का भी' में हमी के आकर्षक स्थलों का अविस्मरणीय वर्णन है जो अत्यंत रोचक है । गद्य सारांश में सुश्री मैथिली जे.आर द्वारा लिखित 'महिलाओं को आर्थिक आजादी की जरूरत', श्रीमती नीनु एम.डी द्वारा लिखित 'वृद्धाश्रम', सुश्री जे.आर मालविका द्वारा लिखित लेख 'अनुमति एक महिला के जीवन से अंत तक' एवं श्री वी. बिजु श्रीधर द्वारा लिखित लेख 'गणतंत्र दिवस' सराहनीय एवं प्रेरणादायक हैं । पद्य रचनाओं में श्री के. अनिल द्वारा रचित 'ये जरूरी तो नहीं' एवं श्री गोपेश कुमार द्वारा रचित

'एक दौर बचपन का' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । शेष रचनाएं भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं ।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीया,

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)

प्रधान महालेखाकार (लेप-प्रथम) का कार्यालय,

मध्य प्रदेश, ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

\*\*\*\*\*

महोदय,

हमें आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'अमृतवाणी' के प्रथम अंक की प्राप्त हुई । राजभाषा हिंदी के विकास में पत्रिका के माध्यम से किया गया यह प्रयास अत्यंत ही प्रशंसनीय है । पत्रिका में सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं । विशेषकर मैं कल कसंगी, ये जरूरी तो नहीं, सतरंगी बोली, मन के हारे हार है मन के जीते जीत आदि रचनाएं विशेषरूप से सराहनीय है । कार्यालय के विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण भी अत्यंत सराहनीय है । पत्रिका की साजसज्जा भी अत्यंत मनोहारी और प्रशंसनीय है । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

भवदीया,

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्र.महालेखाकार(लेप.1), तगिलनाडु,

चेन्नै



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA  
लोकहितार्थं सत्यमिच्छा  
Dedicated to Truth in Public Interest

**भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग**  
**प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल,**  
**तिरुवनंतपुरम व शाखा कार्यालय, तृशूर**



इसे फ़्लिपबुक के रूप में देखें ।